कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत एकमात्र कृषि साप्ताहिक

डाक प्रेषण का दिन – सोमवार, मंगलवार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 17 नवम्बर 2025 वर्ष-80 अंक- 12 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-20 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

रबी विशेषांक

'वर्ष 2026 को कृषि आधारित उद्योग वर्ष के रूप में घोषित किया जाएगा।'

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, म.प्र.

इस अंक में देखें

- गेहूं की सफल खेती के लिए अपनाएं इन सूत्रों को
- सरसों की उन्नत खेती
- मटर की खेती का पूरा फार्मूला
- रेज्ड-बेड पद्धति से चने की उत्पादन तकनीक
- उच्च गुणवत्ता वाले अमरूद की खेती
- रबी फसलों में सिंचाई

कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के लिए 28 लाख पाठकों का एक मात्र साप्ताहिक अखबार

जहाँ ICL का साथ
वहाँ समृद्धि का विश्वास

गेहूं की सुनहरी बालियाँ हों, चने की हरी फलियाँ या टमाटर की लाल चमक —ICL Fertilizers हर फसल को देता है संतुलित पोषण।

सही समय पर सही पोषक तत्व, जिससे मिट्टी भी मुस्कुराए और पैदावार भी बढ़े।
ICL के साथ अब हर किसान बोले — मेरे खेत में उन्नति की गारंटी है!

✆ 1800 210 3031 ◯ 880 618 51 95 ⊕ www.icl-growingsolutions.com

ICL | BIOZ ICL | Select™ | PeaK | Polysulphate | FertiFlow™ | NutriVant™ Foliar Nutrition Line

✆ 1800 210 3031 ◯ 880 618 51 95
⊕ www.icl-growingsolutions.com

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में

मध्य प्रदेश कृषि क्षेत्र में मॉडल राज्य बनने की ओर अग्रसर

(विशेष प्रतिनिधि)

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में कृषि, ग्रामीण विकास, और पंचायत सुधार की दिशा में कई महत्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत की गई है। इन योजनाओं से न केवल किसानों को लाभ मिलेगा, बल्कि पंचायतों को सशक्त बना कर ग्रामीण विकास की गति भी तेज होगी। राज्य सरकार का यह दृष्टिकोण निश्चित रूप से मध्यप्रदेश को कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक मॉडल राज्य बनाने की ओर अग्रसर करेगा। इसी कड़ी में गत दिनों भोपाल और देवास में प्रदेश की किसान और पंचायत व्यवस्थाओं में सुधार को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कई अहम योजनाओं का शुभारंभ किया और किसानों और पंचायत प्रतिनिधियों के लिए नई पहल की। राज्य सरकार की इन पहलों के माध्यम से मध्यप्रदेश देश में कृषि और ग्रामीण विकास के मॉडल प्रदेश के रूप में तेजी से उभर रहा है।

किसानों के लिए भावांतर योजना

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भावांतर भुगतान योजना के तहत किसानों के खाते में 233 करोड़ रुपए की राशि ट्रांसफर की। उन्होंने कहा, 'हमने जो कहा, वह कर दिखाया।' मध्यप्रदेश ने देश में पहली बार भावांतर योजना को लागू किया, जिसका उद्देश्य किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य दिलवाना है। इस योजना में 1.33 लाख किसानों के खाते में राशि भेजी गई। इस योजना के तहत 9 लाख से अधिक किसानों ने सोयाबीन बेचने के लिए पंजीयन कराया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भावांतर योजना में पंजीकृत किसान 15 जनवरी तक अपनी सोयाबीन मंडियों में बेच सकेंगे। पूरे प्रदेश में 220 से अधिक मुख्य मंडियों और 80 उप मंडियों में खरीदी की जा रही है।

पंचायतों को सशक्त बनाने की दिशा में कदम

खेती के साथ ही साथ, पंचायतों को मजबूत आधार देने के लिए राज्य सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। डॉ. यादव ने सरपंचों को 25 लाख रुपए तक के विकास कार्य करने का अधिकार देने की घोषणा भी की है। इसके अलावा, पंचायत प्रतिनिधियों को विकास कार्यों के लिए 50-50 हजार रुपए की राशि भी दी जाएगी।

कृषि आधारित उद्योग वर्ष की घोषणा

मुख्यमंत्री का कहना है कि कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार सक्रिय कदम उठा रही है और इसी दिशा में डॉ. यादव ने आगामी वर्ष 2026 को 'कृषि आधारित उद्योग वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की।

पंचायतों के लिए नई संरचना और सुविधाएं

मुख्यमंत्री ने पंचायतों के लिए 2472 अटल पंचायत भवन और 1037 सामुदायिक भवनों की मंजूरी की घोषणा की। जो पंचायतों को एक मजबूत ढांचा देगा। डॉ. यादव चाहते हैं कि पंचायतों में विकास योजनाएं बनाने और उन्हें लागू करने की व्यवस्था नगरी निकायों की तरह सशक्त बनाई जाए। पंचायतों को अब गांव के विकास के लिए सक्षम बनाया जाएगा। आशा है कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए सतत जुटे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के ये नवाचार मध्य प्रदेश में विस्तार की नई और लम्बी रेखा खींचेंगे।

प्रदेश में 62 लाख हेक्टेयर में हुई बोनी

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में चालू रबी सीजन 2025-26 में अब तक 61 लाख 83 हजार हेक्टेयर में बोनी हो गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में 62.52 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। राज्य की प्रमुख फसल गेहूं की बोनी अब तक 38.64 लाख हेक्टेयर में हो गई है। इस वर्ष रबी फसलों का लक्ष्य 138.85 लाख हेक्टेयर रखा गया है। अब तक लक्ष्य के विरुद्ध कुल रबी बोनी 44 फीसदी पूरी हो गई है।

कृषि विभाग के मुताबिक चने की बोनी अब तक 7.89 लाख हेक्टेयर में हो गई है। अन्य फसलों में अब तक मटर 2.07 लाख हे. में, मसूर 4.17 लाख हेक्टेयर में बोई गई है।

राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोनी 8.32 लाख हेक्टेयर में, अलसी की बोनी 45 हजार हेक्टेयर में हुई है। तथा गन्ना अब तक 15 हजार हेक्टेयर में बोया गया है।

रबी फसलों की बुवाई
14 नवम्बर 2025 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बुवाई
गेहूं	96.81	38.64
जौ	0.34	0.15
चना	17.28	7.89
मटर	3.30	2.07
मसूर	6.36	4.17
सरसों	12.23	8.32
अलसी	1.20	0.45
गन्ना	1.33	0.15

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े**, फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

किसानों के हित में केंद्र ने पेश किया बीज विधेयक 2025 का मसौदा

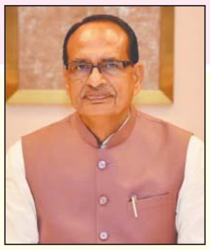

कृषकों को मिलेगा गुणवत्तापूर्ण बीज

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्र सरकार ने कृषि मंत्रालय के तहत बीज विधेयक 2025 का मसौदा पेश किया है। यह नया विधेयक मौजूदा बीज अधिनियम, 1966 और बीज (नियंत्रण) आदेश, 1983 का स्थान लेगा। यह मसौदा केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जारी किया।

मसौदे का मुख्य उद्देश्य किसानों को गुणवत्तापूर्ण और किफायती बीज उपलब्ध कराना, नकली और घटिया बीजों की बिक्री पर रोक लगाना और किसानों को होने वाले नुकसान से बचाना है। इसके अलावा, यह विधेयक नवाचार को बढ़ावा देने, बीज आयात को आसान बनाने, और बीज आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाता है।

बीज विधेयक 2025 में यह प्रस्ताव भी रखा गया है कि नगण्य श्रेणी के अपराधों को अपराधमुक्त किया जाएगा, ताकि व्यापार में आसानी हो और किसानों और कारोबारियों पर अनुपालन का बोझ कम हो। लेकिन गंभीर उल्लंघनों पर कड़े दंड का प्रावधान बनाए रखा गया है।

मसौदा विधेयक अब सार्वजनिक परामर्श के लिए उपलब्ध है। सभी किसानों, विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव और टिप्पणियां ईमेल के माध्यम से भेजें। प्रतिक्रियाएं 11 दिसंबर, तक jsseeds-agri[at]gov[dot]in पर भेजी जा सकती हैं।

मसौदे और प्रतिक्रिया के प्रारूप की जानकारी के लिए मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट https://agriwelfare.gov.in पर जा सकते हैं। इस विधेयक के लागू होने से किसानों को बेहतर बीज, किफायती कीमतें, और सुरक्षित कृषि उत्पादन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

किसानों को मिले 'पादप जीनोम संरक्षक पुरस्कार'

केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में 'पादप जीनोम संरक्षक पुरस्कार समारोह और पीपीवीएफआरए अधिनियम, 2001 के रजत जयंती व पीपीवीएफआरए (पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण) के 21वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में भागीदारी की और चयनित किसानों को पुरस्कृत किया।

केंद्रीय मंत्री ने तेलंगाना के कम्यूनिटि सीड बैंक, पूर्व वर्धमान पश्चिम बंगाल के शिक्षा निकेतन, मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ, असम के सीआरएस-एनए दिहिंग तेंगा उन्नयन समिति, उत्तराखंड के श्री भूपेंद्र जोशी, केरल के श्री टी. जोसेफ, श्री लक्ष्मण प्रमाणिक, श्री अनंतमूर्ति जे, बिहार के श्री नकुल सिंह, उत्तराखंड के श्री नरेंद्र सिंह सहित विभिन्न अन्य श्रेणियों में किसान भाई-बहनों को पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री चौहान ने कहा कि कृषि हमारे देश का मूल रहा है। अनेक बीजों की किस्में पोषण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन बीते वर्षों में कुछ किस्में विलुप्त होने की कगार पर आ गई थीं, जिन्हें सहेजने में किसानो ने प्रशंसनीय भूमिका निभाई है। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि राज्य मंत्रीद्वय श्री भागीरथ चौधरी एवं श्री रामनाथ ठाकुर, कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट, संयुक्त सचिव अजीत कुमार साहू, पीपीवीएफआरए के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, एवं रजिस्ट्रार-जनरल डॉ. डी.के. अग्रवाल उपस्थित थे।

देश में रबी बुवाई 130 लाख हेक्टेयर में हुई

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई तेजी से चल रही है। कुल बुवाई गत वर्ष से लगभग 27 लाख हेक्टेयर आगे है। देश में अब तक 130 लाख 32 हजार हेक्टेयर में बोनी कर ली गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि में 102 लाख 50 हजार हेक्टेयर में बोनी हुई थी। अब तक गेहूं की बुवाई 22.72 लाख हेक्टेयर में हो गई है, जो गत वर्ष 9.98 लाख हेक्टेयर में हुई थी।

कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक 7 नवम्बर तक गेहूं बुवाई 22.72 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि सामान्य क्षेत्र 312.35 लाख हेक्टेयर है। वहीं धान की बोनी अब तक 6.18 लाख हेक्टेयर में हुई है, जबकि गत वर्ष 5.71 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी।

दलहन : देश में दलहनी फसलों की बोनी अब तक 36.83 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो गत वर्ष समान अवधि में 30.43 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी। इसमें चने की बुवाई 26.81 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष अब तक 20.51 लाख हेक्टेयर में चना बोया गया था। वहीं मसूर की बोनी 4.38 लाख हेक्टेयर में हो गई है।

तिलहन : देश में तिलहनी फसलों की बोनी अब तक 54.46 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है, जो गत वर्ष अब तक 47.35 लाख हेक्टेयर में बोयी गई थी। प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बुवाई अब तक 53.35 लाख हे. में हुई है। जो गत वर्ष 46.15 लाख हेक्टेयर में हुई थी।

मोटा अनाज : देश में मोटे अनाज की बुवाई अब तक 10.13 लाख हे. में हो चुकी है। गत वर्ष अब तक 9.02 लाख हे. में बोनी हुई थी। इसके तहत ज्वार की बोनी 5.28 लाख हे. में हो गई है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
7 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूं	**312.35**	**22.72**	**9.98**
धान	**42.93**	**6.18**	**5.71**
दलहन	**140.42**	**36.83**	**30.43**
चना	100.99	26.81	20.51
मसूर	15.13	4.38	4.13
मोटे अनाज	**55.33**	**10.13**	**9.02**
ज्वार	24.62	5.28	5.26
मक्का	23.61	3.21	2.83
तिलहन	**86.77**	**54.46**	**47.35**
सरसों	79.16	53.35	46.15
मूंगफली	3.69	0.34	0.44
अलसी	1.93	0.46	0.65
कुल	**637.80**	**130.32**	**102.50**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।

स्रोत : कृषि मंत्रालय

भ. बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती एवं जनजातीय गौरव वर्ष पर भोपाल में आयोजित ऑल इंडिया एनजीओ मीट में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का स्वागत करते हुए प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य श्री गुलशन बामरा।

मध्यप्रदेश को 'बिजनेस रिफार्म एक्शन प्लान (BRAP)-2024' के तहत चार बिजनेस सेंट्रिक रिफॉर्म क्षेत्रों के लिए सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह पुरस्कार केंद्रीय वाणिज्य मंत्री श्री पियूष गोयल से प्राप्त किया। इस मौके पर एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप भी उपस्थित थे।

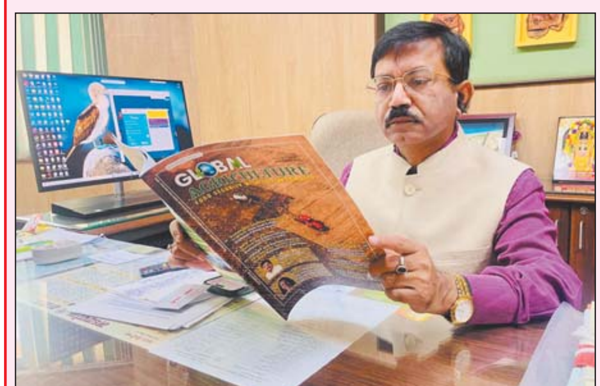

कृषक जगत के अंग्रेजी प्रकाशन 'ग्लोबल एग्रीकल्चर' का अवलोकन करते हुए म.प्र. के राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री मनोज श्रीवास्तव।

प्रधानमंत्री 19 नवंबर को जारी करेंगे पीएम-किसान की 21वीं किस्त

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पीएम किसान सम्मान निधि योजना, प्रत्येक पात्र किसान परिवार को 6,000 रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यह योजना 24 फरवरी, 2019 को शुरू की गई केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। अब तक, देश के 11 करोड़ से ज्यादा किसान परिवारों को 20 किश्तों के माध्यम से 3.70 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि वितरित की जा चुकी है।

गुणवत्तापूर्ण आलू बीज के लिए बनास डेयरी और बीबीएसएसएल ने किया एमओयू

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'सहकार से समृद्धि' के विज़न को साकार करने की दिशा में बनास डेयरी (जो अमूल का हिस्सा है और एशिया की सबसे बड़ी सहकारी डेयरी है) और भारतीय बीज सहकारी समिति लि. (BBSSL) के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले बीज आलू का उत्पादन और वितरण करना है। यह समझौता नई दिल्ली में भारत सरकार के सहकारिता सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी तथा वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में हुआ, जिसमें बनास डेयरी के प्रबंध निदेशक श्री संग्राम चौधरी और BBSSL के प्रबंध निदेशक श्री चेतन जोशी भी उपस्थित थे।

कृषि यंत्रीकरण समय की मांग : श्री चौधरी

सीआईएई में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

भोपाल (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (सीआईएई), भोपाल द्वारा संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में भारतीय कृषि अभियंता सोसाइटी (आईएसएई) का 59वां वार्षिक अधिवेशन एवं 'पूर्व और फसल पश्चात कृषि में मेकाट्रॉनिक्स एवं रोबोटिक्स' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन मुख्य अतिथि श्री भागीरथ चौधरी केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री द्वारा किया गया। श्री चौधरी ने कृषि क्षेत्र में नवाचार, स्वचालन (ऑटोमेशन) और प्रौद्योगिकी-आधारित विकास के महत्व पर बल दिया। संस्थान के ड्रोन प्रयोगशाला में भ्रमण कर इसकी आधुनिक समय में कृषि में उपयोगिता बताई।

इस अवसर पर डॉ. सी.आर. मेहता निदेशक सीआईएई ने संस्थान की उपलब्धियों एवं योगदानों पर प्रकाश डाला। डॉ. एस.एन. झा अध्यक्ष आईएसएई एवं उप महानिदेशक कृषि अभियांत्रिकी आईसीएआर, नई दिल्ली ने आईएसएई की उपलब्धियों तथा कृषि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में इसके योगदानों का उल्लेख किया। आयोजित तकनीकी सत्रों, पैनल चर्चाओं और अन्य गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया जिसमे तीनों दिनों में शोध पत्र की प्रस्तुति में उत्कृष्ट प्रतिभागियों को सम्मनित भी किया गया।

इसके पूर्व पहले दिन संगोष्ठी का शुभारंभ प्रदेश के राज्य मंत्री पशुपालन एवं डेयरी श्री लखन पटेल ने किया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में नवाचार, स्वचालन और प्रौद्योगिकी-आधारित विकास की महत्ता पर बल दिया।

तीन दिवसीय कार्यक्रम में समानांतर तकनीकी सत्र, विशेषज्ञ व्याख्यान, शोध पत्र प्रस्तुतियाँ तथा ड्रोन, रोबोटिक सिस्टम, आईओटी आधारित उपकरण, ट्रैक्टर और आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

इस आयोजन में भारत एवं विदेशों से लगभग 600 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमे वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों, किसान, उद्योग विशेषज्ञों, नीति निर्माता तथा उद्यमी शामिल थे।

सम्मेलन में कृषि अभियांत्रिकी में उत्कृष्ट योगदान के लिए महिन्द्रा ट्रैक्टर्स को सम्मानित किया गया। इस मौके पर पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री प्रफुल्ल पांडेय।

सभी जिला सहकारी बैंक आरटीजीएस की सुविधा शुरू करें : श्री आहूजा

भोपाल (कृषक जगत)। अपेक्स बैंक के प्रशासक एवं प्रदेश के प्रमुख सचिव, सहकारिता श्री डी.पी. आहूजा ने अपेक्स बैंक मुख्यालय में 72वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह की शुरूआत पर प्रदेश के 38 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों की पैक्स कम्प्यूटराईजेशन योजना पर राज्य स्तरीय क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण समिति की बैठक को संबोधित करते हुए यह निर्देश दिये कि सभी पैक्स को सॉफ्टवेयर कार्यप्रणाली पर लाएं। साथ ही प्रदेश के सभी जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक अपेक्स बैंक के सदस्य बनकर सीधे एनईएफटी एवं आर.टी.जी.एस. की सुविधा आरंभ करेंगे।

बैठक में अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता ने अपेक्षा की कि आज के चुनौतीपूर्ण दौर में व्यवसाय का विविधीकरण बहुत जरूरी हो गया है, अतः हमें पारम्परिक कार्यप्रणाली के बजाय नवीन संसाधनों का उपयोग आई.बी.पी.एस. के माध्यम से चयनित नवीन अधिकारियों/कर्मचारियों से कराने की शुरूआत करना चाहिए। इस अवसर पर पंजीयक सहकारिता श्री मनोज पुष्प भी उपस्थित थे।

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

हरनि छलांग कद्दू-काकरी, पैगे-पैगे कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखास (ईख)।।

सही बीज, उर्वरक ही रबी की रौनक

प्रकृति की विचित्र मेहरबानी से इस वर्ष अक्टूबर के आखिरी सप्ताह तक पानी बरसता रहा इससे रबी फसलों की बुआई के लिये, भूमि की तैयारी के लिये अच्छा अवसर मिल गया, जहां तक अच्छे उत्पादन का प्रश्न है। यदि भूमि की तैयारी अच्छी तरह से हो जाये तो बुआई अंकुरण और स्वस्थ पौधों के मिलने का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे देश का लगभग 60 प्रतिशत भाग ऐसा है जहां पर रबी की बुआई वर्षा आधारित होती है और इसी हिस्सों को यदि नमी मिल गई हो तो वहां की औसत उपज बढ़ाना आसान हो जाता है। जहां तक गेहूं का प्रश्न है अधिकांश क्षेत्र सिंचित होता है और सिंचाई के लिये जल के विभिन्न श्रोत होते हैं। सर्वाधिक सिंचाई कमांड क्षेत्र में उपलब्ध रहती है, रबी की दूसरी फसल चना है जिसकी बुआई के लिए भूमि चयन, भूमि की तैयारी से लेकर रखरखाव तक में आमतौर पर उतनी चिंता नहीं की जाती है जितनी गेहूं की, की जाती है चना के साथ-साथ अन्य दलहनी फसलें जैसे मसूर, मटर आदि फसलें भी ऐसी हैं जिनका यदि उचित रखरखाव किया जाये तो उत्पादकता बढ़ाई जाना कोई असंभव बात नहीं है। दलहनी फसलें प्रोटीन की प्रमुख श्रोत होती हैं जिसकी आवश्यकता आज आम आदमी को बहुत है। आमतौर पर रबी दलहनी फसलों में उर्वरक उपयोग बहुत कम होता है और जहां होता है वहां भी असंतुलित होता है जबकि इन फसलों में फास्फोरस तथा पोटाश का उपयोग नत्रजन की तुलना में कम होता है। चूंकि दलहनी फसलें वायुमंडल से नत्रजन एकत्रित करने की क्षमता रखती हैं इस कारण अन्य आवश्यक उर्वरकों की पूर्ति करके अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा राईजोबियम कल्चर तथा पीएसबी का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए

ताकि अच्छा अंकुरण अधिक नाईट्रोजन तथा भूमि में उपलब्ध फास्फेट का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। ऐसा करके दलहनी विशेषकर चने की उत्पादकता सरलता से बढ़ाई जा सकती है। उल्लेखनीय है कि देश की जनसंख्या 2040 तक लगभग 150 करोड़ तक पहुंच सकती है। जिसके लिये लगभग 350 टन दालों की आवश्यकता पड़ सकती है जो वर्तमान के उत्पादन से लगभग दोगुना है। मांग की पूर्ति के लिये विवश शासन को बाहर से दलहन का आयात करना होगा जिसका भार आम लोगों की आर्थिक संतुलन को भी बिगाड़ सकता है। पिछले दिनों बढ़े दलहन के दाम की मार आज तक लोगों को याद है। इस कारण हमें हर संभव प्रयास करके दलहनों की उत्पादकता बढ़ाने के लिये कम लागत की तकनीकी का अंगीकरण शत-प्रतिशत करना ही होगा। रबी का राजा गेहूं का रखरखाव प्रायः हर जगह किया जाता है। क्योंकि उसके उत्पादन की समस्या वर्तमान में उपलब्ध एक दर्जन से अधिक विकसित किस्मों के कारण सुलझ गई है। पुरानी जातियों जैसे डब्ल्यू एच-147 या लोक-1 जिन्हें आज भी कुछ क्षेत्र पकड़े हुए हैं। निश्चित ही लक्षित उत्पादन से दूर रहेंगे। कंडुआ तथा गेरूआ इन दोनों जातियों से हानि की संभावनाओं से कोई इंकार नहीं कर सकता है। दूसरी बात दो या कहीं-कहीं तीन गुना बीज दर डालकर अधिक उत्पादन की कल्पना करता किसान आज भी है। अधिक पौध संख्या से उत्पादन के आंकड़ों को पाना संभव नहीं है जरूरी तो यह है कि एक इकाई क्षेत्र में पर्याप्त पौधों की जो सिफारिश के आधार पर बीज दर से प्राप्त की जा सकती है। खाद, बीज का मिश्रण कदापि नहीं किया जाये। राई-सरसों, अलसी की बुआई गहराई पर ना हो तथा सभी फसलों पर क्रांतिक अवस्था में ही सिंचाई की जाये और खर्च की तकनीकी अपनाकर रबी फसलों से लक्षित उत्पादन लेकर स्वयं की, प्रदेश की, देश की प्रगति प्रशस्त की जाये।

खाली थालियाँ, भरे गोदाम : कैसी यह दुनिया हमारी ?

• प्रो. आर.के. जैन 'अरिजीत'

जब एक भूखे बच्चे की आँखों में रोटी का सपना धुँधला पड़ता है, तो मानवता की सारी चमक एक पल को थम सी जाती है। न चाँद की उड़ानें, न टेक्नोलॉजी की चकाचौंध, न ही गगनचुंबी इमारतें उस एक निवाले का मोल रखती हैं, जो किसी की भूख मिटा दे। हर साल 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस यह कसक जगाता है—यह महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक आह्वान है- एक ऐसी दुनिया बनाने का, जहाँ हर थाली में पौष्टिक भोजन हो और हर भविष्य सुरक्षित। 2025 की थीम, 'बेहतर भोजन, बेहतर भविष्य के लिए एकजुटता,' हमें भोजन की उपलब्धता, गुणवत्ता और टिकाऊपन के लिए सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश देती है। यह वह सपना है, जहाँ भूख सिर्फ एक भूली-बिसरी कहानी बन जाए।

1945 में संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की स्थापना ने विश्व खाद्य दिवस की नींव रखी, जिसका लक्ष्य था हर इंसान तक भोजन को गरिमा के साथ पहुँचाना। मगर 80 साल बाद भी यह मिशन अधूरा है। विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के मुताबिक, 82.8 करोड़ लोग आज भी भूख की चपेट में हैं- यह आँकड़ा सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि उन माँओं की चुप्पी है, जो अपने बच्चों को भूखा सुलाती हैं; उन किसानों की पीड़ा है, जो दुनिया को खिलाते हुए खुद भूख से जूझते हैं। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि हर साल 1.3 अरब टन भोजन बर्बाद होता है— इतना कि यह पूरे उप-सहारा अफ्रीका को एक साल तक खिला सकता है। एक ओर खाली थालियाँ बेचैन हैं, तो दूसरी ओर डस्टबिन भोजन से अटे पड़े हैं। यह विडंबना हमसे सवाल करती है- क्या हमारी प्रगति अधूरी नहीं?

भारत में यह संकट और गहरा है। विश्व का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश होने के बावजूद, ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2024 में भारत 127 देशों में से 105वें पायदान पर है। यहाँ 19.4 करोड़ लोग भूखे

हैं, और 43 प्रतिशत बच्चे कुपोषण की मार झेल रहे हैं। 'अन्नदाता' कहलाने वाला किसान कर्ज, बेमौसम बारिश और बाजार की अनिश्चितताओं में फँसकर अपने परिवार को दो जून की रोटी नहीं दे पाता। फिर भी, भारत की मिट्टी में वह शक्ति है, जो न सिर्फ देश, बल्कि पूरी दुनिया को खिला सकती है। 2025 की थीम हमें यही सिखाती है कि सरकार, किसान, वैज्ञानिक और समाज की एकजुटता ही वह पुल है, जो खेतों से थालियों तक भोजन पहुँचाएगा। हाथ में हाथ मिलाकर भूख को इतिहास बना दें।

भोजन का संकट केवल मात्रा का नहीं, बल्कि पहुँच, गुणवत्ता और समानता का है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट बताती है कि 2020 के बाद से खाद्य कीमतों में 20 प्रतिशत की उछाल ने गरीब देशों में भोजन को और दुर्लभ बना दिया। भारत में राशन प्रणाली और सब्सिडी जैसी योजनाएँ हैं, मगर भ्रष्टाचार और अक्षमता के कारण लाखों जरूरतमंद भूखे रह जाते हैं। इससे भी गंभीर है 'छिपी भूख' की मार—लाखों लोग भोजन तो खाते हैं, लेकिन पोषण की कमी के कारण बच्चों में स्टंटिंग और वेस्टिंग जैसे रोग बढ़ रहे हैं। 2025 की थीम 'बेहतर भोजन' यही माँग करती है कि हम केवल पेट भरने नहीं, बल्कि हर व्यक्ति तक पौष्टिक, संतुलित आहार पहुँचाने पर ध्यान दें, जो उनकी शारीरिक और मानसिक सेहत को संवारे।

2025 की थीम पर्यावरण और भोजन के अटूट रिश्ते को भी उजागर करती है। जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की घटती उर्वरता, और जल संसाधनों का दोहन हमारी खाद्य प्रणाली को कमजोर कर रहे हैं। एफएओ के मुताबिक, विश्व का 70 प्रतिशत जल कृषि में खर्च होता है, जिसका बड़ा हिस्सा बर्बाद हो जाता है। सतत कृषि, जैविक खेती, ड्रिप इरिगेशन, और वर्षा जल संचय अब जरूरत बन चुके हैं। हमें स्थानीय, मौसमी भोजन को बढ़ावा देना होगा, ताकि आयात कम हो और किसानों को लाभ मिले। साथ ही, भंडारण और परिवहन में होने वाली बर्बादी को रोकने के लिए खाद्य आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना होगा। यह थीम हमें सिखाती है कि बेहतर भविष्य तभी संभव है, जब हम

जब दुनिया तकनीकी तरक्की पर गर्व कर रही है, तब भी करोड़ों लोग भूख से जूझ रहे हैं। हर साल मनाया जाने वाला विश्व खाद्य दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास का असली मापदंड पेट भर रोटी है। 2025 की थीम 'बेहतर भोजन, बेहतर भविष्य के लिए एकजुटता' इस बात पर बल देती है कि भोजन केवल संसाधन नहीं, बल्कि मानवता का साझा अधिकार है।

प्रकृति के साथ कदम मिलाएँ।

भारत में भोजन केवल भौतिक जरूरत नहीं, बल्कि संस्कृति और प्रेम का प्रतीक है। 'अन्नपूर्णा' का रूप लिए भोजन गाँवों में मेहमानों को खिलाने का गर्व और एकता का संदेश देता है। मगर आधुनिक उपभोक्तावाद ने हमें फास्ट फूड और पैकेज्ड भोजन की चमक में उलझा दिया, जबकि हम अपनी जड़ें बाजरा, ज्वार, रागी जैसे पौष्टिक और टिकाऊ अनाजों को भूलते जा रहे हैं। 'बेहतर भोजन' हमें अपनी परंपराओं की ओर लौटने और स्थानीय, पर्यावरण-अनुकूल भोजन को अपनाने का आह्वान करता है, जो न केवल सेहत दे, बल्कि धरती को भी बचाए।

भारत सरकार की योजनाएँ—राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013, मिड-डे मील, पोषण अभियान, और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना—भूख और कुपोषण से लड़ने की दिशा में अहम कदम हैं। मगर इनकी सफलता समाज की भागीदारी पर टिकी है। भारत में हर साल 67 मिलियन टन भोजन (अनुमानित कीमत लगभग रू. 92,000 करोड़) बर्बाद होता है- यह एक त्रासदी है। जरूरत के हिसाब से खाना खरीदना, बचे हुए भोजन को दान करना, और सामुदायिक रसोईघरों में योगदान देना जैसे छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। 'हाथ में हाथ' मिलाकर भूख को हराएँ और हर थाली को समृद्ध करें।

तकनीक भूख के खिलाफ एक शक्तिशाली हथियार बन सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), ड्रोन, और सैटेलाइट्स के जरिए फसलों की निगरानी, सटीक मौसम भविष्यवाणी, और स्मार्ट आपूर्ति श्रृंखलाएँ भोजन की बर्बादी को कम कर रही हैं। मगर यह ताकत तभी सार्थक है, जब यह भारत के 86 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसानों तक पहुँचे, जिनके पास आधुनिक संसाधनों की कमी है। यदि हम इन किसानों को तकनीक, प्रशिक्षण, और बाजार से जोड़ सकें, तो खाद्य सुरक्षा का सपना हकीकत में बदल सकता है। यह एकजुटता ही खेतों से थालियों तक भोजन का सफर सुनिश्चित करेगी।

विश्व खाद्य दिवस हमें सिखाता है कि भूख केवल पेट की नहीं, आत्मा की भी होती है। किसी भूखे को भोजन देना सिर्फ उसका पेट भरना नहीं, बल्कि उसकी गरिमा और उम्मीद को पोषित करना है। 'हाथ में हाथ' का मतलब है कि यह जिम्मेदारी हम सबकी है। हर थाली में अन्न का होना महज एक लक्ष्य नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जवाबदेही है। इस विश्व खाद्य दिवस पर संकल्प लें कि हम भोजन की बर्बादी रोकेंगे, जरूरतमंदों के साथ अन्न बाँटेंगे, और एक ऐसी दुनिया बनाएँगे जहाँ भूख सिर्फ एक भूली-बिसरी कहानी हो। क्योंकि जब हर चेहरे पर भोजन की मुस्कान खिलेगी, तभी हमारी धरती सही मायनों में समृद्ध और शांतिपूर्ण होगी। **(सप्रेस)**

गेहूं की सफल खेती के लिये अपनायें इन सूत्रों को

● उपेन्द्र सिंह ● कैलाश चन्द्र शर्मा
● दिलीप कुमार वर्मा ● कुलदीप सिंह सोलंकी
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केन्द्र, इन्दौर

● खेत की तैयारी (जुताई तथा पठार) खरीफ फसल कटते ही करें।

● पलेवा नहीं करें, बल्कि सूखे में बुवाई करके तुरन्त सिंचाई करें।

● क्षेत्र के लिए अनुशंसित प्रजातियों का ही इस्तेमाल करें। प्रजाति का चुनाव अपने संसाधनों यानि उपलब्ध सिंचाई की मात्रा तथा आवश्यकताओं के अनुरूप करें।

● सूखा रोधी एवं कम सिंचाई चाहने वाली उन्नत किस्मों का अधिकाधिक उपयोग करें।

● पोषक तत्वों का उपयोग मृदा स्वास्थ्य जाँच रिपोर्ट के आधार पर करें।

● नत्रजन: स्फुर: पोटाश संतुलित मात्रा अर्थात् 4:2:1 के अनुपात में डालें।

● ऊँचे कद की (कम सिंचाई वाली) जातियों में नत्रजन: स्फुर: पोटाश की मात्रा 80:40:20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई से पूर्व ही दें।

● बौनी शरबती किस्मों को नत्रजन:स्फुर:पोटाश की मात्रा 120:60:30 तथा मालवी किस्मों को 140:70:35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर दें।

● नत्रजन की आधी मात्रा और स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई पूर्व दें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई (बुआई के 20 दिन बाद) देनी चाहिये।

● बुवाई से पहले मिश्रित खाद जैसे 12:32:16 तथा यूरिया का उपयोग करें।

● मृदा में जीवांश पदार्थ यानि कार्बनिक या हरी खादों का प्रति तीसरे वर्ष प्रयोग करें ताकि भूमि को सूक्ष्म तत्वों की कमी से बचा जा सके।

● बीज दर के लिए हमेशा याद रखें कि बड़े दाने वाले बीज की दर अधिक रखी जाती है तथा छोटे दाने के लिए कम। इसलिये 1000 दाने गिनें इसका वजन करें, जितने ग्राम वजन होगा उतने ही किलोग्राम बीज/एकड़ क्षेत्र के लिये प्र्याप्त होगा।

● खाद तथा बीज अलग-अलग बोयें, खाद गहरा (ढाई से तीन इंच) तथा बीज उथला (एक से डेढ़ इंच गहरा) बोयें, बुवाई पश्चात पठार/पाटा न करें।

● बुवाई के बाद खेत में दोनों ओर से (आड़ी तथा खड़ी) नालियाँ प्रत्येक 15-20 मीटर (खेत के ढाल के अनुसार) पर बनायें तथा बुवाई के तुरन्त बाद इन्हीं नालियों द्वारा बारी- बारी से क्यारियों में सिंचाई करें।

● अर्द्धसिंचित/कम सिंचाई (1-2 सिंचाई) वाली प्रजातियों में एक से दो बार सिंचाई 35-40 दिन के अंतराल पर करें।

● पूर्ण सिंचित प्रजातियों में 20-20 दिन के अंतराल पर 4 सिंचाई करें।

● सिंचाई समय पर, निर्धारित मात्रा में, तथा अनुशंसित अंतराल पर ही करें।

● खड़ी फसल में डोरे (व्हील हो) या मजदूरों द्वारा खरपतवारों की सफाई करायें।

● खेती में जहरीले रसायनों का उपयोग सीमित करें। रोग व नीदा नियत्रंण के लिये जीवनाशक रसायनों का उपयोग वैज्ञानिक संस्तुति के आधार पर ही करें।

● चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के लिये 2-4 डी 650 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., अथवा मैटसल्फ्युरॉन मिथाइल 4 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

● संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के लिये क्लॉडीनेफॉप प्रोपरजिल - 60 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

● दोनों प्रकार के खरपतवारों के लिये: एटलान्टिस 400 मिलीलीटर अथवा वैस्टा 400 ग्राम अथवा सल्फोसल्फ्युरॉन 25 ग्राम सक्रिय तत्व/हे. अथवा सल्फोसल्फ्युरॉन 25 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., .मैटसल्फूरॉन मिथाइल 4 ग्राम सक्रिय तत्व/हे., 600 लीटर पानी में मिलाकर 30-35 दिन की फसल होने पर छिड़कें।

मध्य भारत के लिये अनुशंसित गेहूं की नवीन प्रजातियाँ

बुवाई अवस्था	बुवाई का समय	सिंचाई	प्रजातियाँ	
			चन्दौसी/शरबती	कठिया/मालवी
अगेती	20 अक्टूबर से 10 नवम्बर	1-2 सिंचाई	एच.आई. 1605 (पूसा उजाला), जे-डब्ल्यू. 3020, जे-डब्ल्यू. 3173, जे-डब्ल्यू. 3211, जे-डब्ल्यू. 3269, एम-पी- 3288, डी.बी.डब्ल्यू. 110 एच.आई. 1655 (पूसा हर्षा)	एच.आई. 8802 (पूसा गेहूँ 8802), एच.आई. 8805 (पूसा गेहूँ 8805), एच.आई. 8823 (पूसा प्रभात), एच.आई. 8830 (पूसा कीर्ति)
समय से	11 से 25 नवम्बर	4-5 सिंचाई	जी.डब्ल्यू. 366, जी.डब्ल्यू. 513, एच.आई.1544 (पूर्णा), एच.आई.1636 (पूसा वकुला) एच.आई 1650 (पूसा ओजस्वी)	एम.पी.ओ.1255, एच.आई. 8663 (पोषण), एच.आई. 8713 (पूसा मंगल), एच.आई.8737 (पूसा अनमोल), एच.आई. 8759 (पूसा तेजस) एच.आई. 8826 (पूसा पोष्टिक)
पिछेती	26 नवम्बर से 5 जनवरी	4-5 सिंचाई	जे-डब्ल्यू.1202, जे-डब्ल्यू.1203, एम.पी. 3336, राज. 4238, एच.डी.2932 एच.आई.1634 (पूसा अहिल्या)	-

सरसों की उन्नत खेती

● सीता चौधरी ● डॉ. एन के मीना
● एम. पी. सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ
● डॉ. आर. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केंद्र, भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल
sitachoudhary110@gmail.com

सरसों और राई भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में शामिल हैं। सरसों के हरे पौधों को पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में तथा बीज, तेल और खली को पशुओं के आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी खली का शीतल प्रभाव होने के कारण यह कई रोगों की रोकथाम में सहायक होती है। खली में निम्न पोषक तत्व नाइट्रोजन: 4-9 प्रतिशत, फॉस्फोरस: 2.5 प्रतिशत और पोटाश: 1.5 प्रतिशत पाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों के कारण विभिन्न देशों में जैविक खाद के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

सरसों का महत्व और उपयोग

भारत में सरसों एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसके बीज से 30-48 प्रतिशत तक तेल प्राप्त होता है। इसके तेल का उपयोग खाना पकाने, मालिश करने, साबुन और ग्रीस बनाने, फल और सब्जियों के संरक्षण के लिए किया जाता है।

मृदा

रेतीली से लेकर भारी मटियार मिट्टी में सरसों की खेती संभव है। बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी हल्की क्षारीय हो सकती है। लेकिन अम्लीय मिट्टी फसल के लिए हानिकारक होती है।

जलवायु

सरसों की खेती के लिए शरद ऋतु (रबी मौसम) आदर्श होती है। फसल के लिए 18-25 डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त है। फूल आने के समय अधिक आर्द्रता, बारिश, और बादल फसल के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन परिस्थितियों में माहू या चौपा कीट का प्रकोप बढ़ सकता है।

खेत की तैयारी

सरसों की खेती के लिए भुरभुरी मृदा सर्वोत्तम होती है। खरीफ की फसल कटने के बाद एक गहरी जुताई करें, फिर 3-4 बार देसी हल से जुताई कर के पाटा लगा कर खेत को समतल और भुरभुरा बनाना आवश्यक है। असिंचित क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में खेत खाली छोड़ने से जल संरक्षण में मदद मिलती है।

दीमक और अन्य कीटों के प्रकोप को रोकने के लिए अंतिम जुताई के समय क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। एजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर (2-3 किलोग्राम) को 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर अंतिम जुताई के समय खेत में डालें।

बुवाई

सरसों की बुवाई के लिए 25-26 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आदर्श रहता है। 15 अक्टूबर से पहले सरसों की बुवाई करने से एफिड या माहू का प्रकोप कम आता है। कतारों में बुवाई करें। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी व पौधों से पौधों की दूरी 10 सेमी रखें। बीज की गहराई सिंचित क्षेत्र में 5 सेमी तथा असिंचित क्षेत्र में नमी के अनुसार रखें।

बीज मात्रा

शुष्क क्षेत्रों में 4-5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्रों में 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा पर्याप्त होती है। बुवाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सिंचित क्षेत्रों में 8-10 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई से 4 सप्ताह पहले तथा बारानी क्षेत्रों में 4-6 टन सड़ी खाद वर्षा से पहले प्रति हेक्टेयर खेत में समान रूप से डालें। सिंचित क्षेत्र के लिए नत्रजन (नाइट्रोजन) 80 किलोग्राम, फॉस्फोरस 30-40 किलोग्राम और गंधक (जिप्सम) 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करे। नत्रजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें। तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के समय दें।

सरसों की उन्नत किस्में

डीआरएमआर 1165-40 (रुक्मणी)

यह सरसों की एक उन्नत किस्म है इसके पौधे की ऊंचाई 177-196 सेमी होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 22-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में तेल की मात्रा 40 से 42.5 प्रतिशत तक होती है। यह सरसों किस्म 135-151 दिन में तैयार हो जाती है। सिंचित और असिंचित दोनों ही स्थितियों में सरसों की यह किस्म बेहतर पैदावार देती है।

डीआरएमआरआईसी 16-38 (बृजराज)

सिंचित क्षेत्रों में देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की ऊंचाई 188 से 197 सेमी और बीज आकार 2.9 से 5 ग्राम है। यह किस्म 120 से 149 दिन की अवधि में परिपक्व हो जाती है। और इसमें तेल की मात्रा 37.6 से 40.9 प्रतिशत होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम होता है।

डीआरएमआर 2017-18 (राधिका)

सिंचित स्थिति में देर से बुआई के लिए सरसों की यह किस्म बेहतर है। DRMR 2017-15 सरसों किस्म की औसत उत्पादन क्षमता 1788 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इसके बीज में तेल की मात्रा 40.7 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म की परिपक्वता अवधि 120 से 150 दिन की है। सरसों की इस किस्म में अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, कोमल फफूंद और चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम है।

डीआरएमआर 150-35 (भारतीय सरसों)

इस सरसों की पैदावार क्षमता 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें तेल की मात्रा 39.8 प्रतिशत तक होती है। पौधे की ऊंचाई 164-186 सेमी और परिपक्वता अवधि 114 दिन होती है।

डीआरएमआरआईजे-31 (गिरिराज)

सरसों फसल की एक उन्नत और प्रमाणित किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा 39-42.6 प्रतिशत तक की होती है। इसकी पैदावार क्षमता 23-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की है। इसके पौधे की ऊंचाई 180-210 सेमी होती है। और परिपक्वता 137-153 दिन की है।

आरएच 30

यह किस्म सिंचित और असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। गेहूं, चना, और जौ के साथ अंतरवर्तीय फसल के लिए आदर्श। पौधों की ऊँचाई लगभग 196 सेंटीमीटर, शाखाएँ 5 या अधिक। पकने का समय 120-130 दिन। उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ।

टी-59 (वरुणा)

यह 8 प्राथमिक शाखाओं वाली देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। फूल आने का समय 45-50 दिन व पकने का समय 130-135 दिन है। तेल की मात्रा 36 प्रतिशत , उपज 15-18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर (असिंचित)। दाने मोटे और काले रंग के। मोयले के प्रकोप से बचने के लिए 15-20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

पूसा बोल्ड

इस किस्म की ऊँचाई मध्यम व फलियाँ मोटी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 37-38 प्रतिशत व उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

बायो 902 (पूसा जयकिसान)

यह रोग प्रतिरोधी किस्म होती है। इसमें सफेद रोली और मुरझान रोगों का प्रकोप कम होता है। पौधे की ऊँचाई 160-180 सेमी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 38-40 प्रतिशत व उपज 18-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। तथा इसका दाना झड़ता नहीं व कालापन लिए भूरे रंग का होता है।

सिंचाई

यदि वर्षा पर्याप्त हो तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। जल की कमी होने पर कम से कम 2 सिंचाई करें। पहली सिंचाई बुवाई के 30-40 दिन बाद, दूसरी सिंचाई (फली बनते मय) 70-80 दिन बाद। यदि जल सीमित हो तो केवल एक सिंचाई (फूल आने के समय) 40-50 दिन की फसल में करें।

निराई-गुड़ाई और खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली निराई करें। छंटाई के द्वारा पौधों की संख्या नियंत्रित करें, और पौधों के बीच 8-10 सेमी की दूरी रखें। सिंचाई के बाद गुड़ाई करें। इससे खरपतवार नियंत्रित होता है और मिट्टी में नमी संरक्षित रहती है।

इस प्रक्रिया को सही ढंग से अपनाने से सरसों की फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। प्याजी खरपतवार की रोकथाम के लिए फ्लूम्लोरेलिन (1 लीटर सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर) रसायन का छिड़काव करें। सूखी बुवाई की स्थिति में पहले बुवाई करें, फिर फ्लूम्लोरेलिन का छिड़काव करके सिंचाई करें। जो की खरपतवार के प्रसार को रोकने में मदद करता है।

कटाई

सरसों की फसल 120 से 150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जैसे ही पौधों की पत्तियाँ और फलियाँ पीली पड़ने लगें तुरंत कटाई करें। समय पर कटाई न करने पर फलियाँ चटकने लगती हैं, जिससे उपज में 5-10% तक की कमी हो सकती है। कटाई के दौरान सुनिश्चित करें कि सत्यानाशी खरपतवार का बीज या फल फसल में न मिले। सत्यानाशी के बीज से फसल का तेल दूषित हो सकता है, जिससे ड्रॉपसी नामक बीमारी हो सकती है।

उत्पादन

उन्नत तकनीक अपनाने पर असिंचित क्षेत्रों में 15-20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 20-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। सरसों की फसल की उपज को बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकों का पालन, समय पर सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, और कटाई पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

निष्कर्ष

सरसों की उन्नत खेती के लिए सही प्रजाती का चयन, उचित भूमि की तैयारी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण जरूरी है। आधुनिक तकनीको एवं वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर उपज में वृद्धि की जा सकती है। जिससे किसानो की आय में सुधार होगा।

मटर की खेती का पूरा फॉर्मूला

सही बीज मात्रा, उर्वरक और बुवाई से बढ़ेगी पैदावार

देशभर में रबी फसलों की बुवाई शुरू हो गई है। ऐसे तो रबी सीजन की प्रमुख फसलें गेहूं और सरसों को माना जाता है, लेकिन इस सीजन में दलहन फसलें भी बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं, जो किसानों को फायदे का सौदा साबित होती हैं।

मटर, एक ऐसी फसल है, जो न केवल अपने पौष्टिक गुणों से भरपूर है, बल्कि भारतीय रसोई में भी इसकी खास अहमियत है। साथ ही, मटर का उपयोग दाल के रूप में भी किया जाता है। अगर आप भी इस सीजन में मटर की खेती करने का विचार कर रहे हैं, तो आपको सबसे पहले खेत की तैयारी और उचित देखभाल और उन्नत किस्मों के बारे में जानना बेहद जरूरी है। सही तकनीक और अच्छे ख्याल से आप मटर की बेहतरीन पैदावार प्राप्त कर सकते हैं और अपनी शानदार कमाई कर सकते हैं।

खेत की तैयारी कैसे करें

मटर एक शीत ऋतु की फसल है, जो ठंडे मौसम में अच्छी पैदावार देती है। इस फसल के लिए भुरभुरी और दोमट मिट्टी उत्तम मानी जाती है, क्योंकि ऐसी मिट्टी में पानी का संचय और वायु का संचार अच्छा होता है। मटर के अंकुरण के लिए 22 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे उपयुक्त होता है। इसके अलावा, मटर की वृद्धि के लिए 13 से 18 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे आदर्श माना जाता है। पाले के प्रभाव से मटर की फसल को बहुत नुकसान हो सकता है, खासकर पुष्पन अवस्था में। इसलिए, मटर को पाले से बचाने के लिए खेत की उचित देखभाल करनी जरूरी है। इस फसल को पाले से सुरक्षित रखने के लिए खेत में पलेवा (गहरी जुताई) करना और पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

बीज की मात्रा

शीघ्र पकने वाली किस्मों के लिए 100-120 किग्रा एवं मध्यम व देर से पकने वाली किस्मों के लिए 80 से 90 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बीज उपचार

बीज को थायरम 3 ग्राम प्रति किलो या बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से उपचारित कर लें एवं इसके बाद 3 ग्राम प्रति किलोग्राम राइजोबियम से भी उपचारित करें।

बीज बोने की दूरी

शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 5-6 सेमी रखें। मध्यम एवं देर से पकने वाली किस्मों में, 45 सेमी पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेमी रखें। खेत में पलेवा देकर बतर आने पर 5-7 सेमी गहराई पर बोनी करें।

खाद एवं उर्वरक

अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 20 टन प्रति हे. की दर से खेत की तैयारी के समय में अच्छी तरह से मिला दें। 40 किग्रा यूरिया, 375 सिंगल सुपर फास्फेट किग्रा एवं 50 म्यूरेट ऑफ पोटाश बुवाई के समय दें।

खरपतवार नियंत्रण

खेतों में पलेवा करके खेत को तैयार करने में काफी संख्या में खरपतवार खत्म हो जाते हैं। रसायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 48 घंटे के भीतर पेंडीमिथालीन नामक दवा 3.3 किग्रा/ हे. की दर से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

उन्नतशील किस्में

पूसा प्रगति - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित मटर की किस्म पूसा प्रगति किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही है। यह एक जल्दी पकने वाली बौनी किस्म है। खास बात है कि इस किस्म पर चूर्णी फफूंदी नामक रोग नहीं लगता है। इसकी लंबाई 9-10 सेमी होती है और इसके प्रत्येक फली में 8-10 दाने पाये जाते है।

यह किस्म महज 60-65 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी उपज 70 क्विंटल हरी फलिया प्रति हेक्टेयर है।

पीएलएम-3 - मटर की खेती के लिए पीएलएम-3 किस्म भी किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह किस्म 60-65 दिन में तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। इसके फलियों की लम्बाई 8-10 सेमी होती है, जिसकी प्रत्येक फलियों में 8-10 दाने पाये जाते है। इसकी उपज 90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरी फलियां है।

जवाहर मटर-3- यह किस्म टी-19 एवं अर्लीबेजर के क्रास से विकसित की गई है। इसमें फलियों की लम्बाई 6-7 सेमी एवं फली में दाने 7 तक होते है। उपज 75 क्विंटल प्रति हे. फलियां है।

जवाहर मटर-4- यह किस्म बीज की बुवाई से 75 दिन में तैयार हो जाती है। फलियों की लम्बाई 7 सेमी एवं फलियां में 6 दाने पाये जाते है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28.7 प्रतिशत तक होती है।

जवाहर मटर-1- यह जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। इसकी तुड़ाई 70-80 दिन में आरंभ हो जाती है। उपज 90-120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर फली है। दानों की संख्या 8 से 9 एवं प्रोटीन प्रतिशत 24.6 प्रतिशत तक होता है।

उच्च गुणवत्ता वाले अमरूद की खेती

• डॉ. विजय अग्रवाल
(वैज्ञानिक-उद्यानिकी)
आंचलिक कृषि अनुसंधान केंद्र, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम

भारत में अमरूद की खेती में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसने देश को विश्व स्तर पर अग्रणी उत्पादकों में से एक बना दिया है। घरेलू और निर्यात बाज़ारों में गुणवत्तापूर्ण फलों की बढ़ती माँग के साथ, अमरूद की प्रीमियम किस्में महत्वपूर्ण व्यावसायिक संभावनाएँ प्रदान करती हैं। आधुनिक कृषि तकनीकों के साथ उन्नत, उच्च उपज देने वाली प्रीमियम किस्मों को अपनाने से उत्पादकता में वृद्धि, फलों की बेहतर गुणवत्ता और उत्पादकों के लिए आकर्षक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इस लेख का उद्देश्य नए बागवानों/उत्पादकों को क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुकूल सही किस्मों और तकनीकों का चयन करके इन अवसरों का लाभ उठाने में मदद करना है।

भारत में अमरूद की खेती मौजूदा किस्मों के साथ-साथ प्रीमियम और विदेशी किस्मों के आने से एक रोमांचक बदलाव का अनुभव कर रही है। नए बागवानों के लिए, उपज, गुणवत्ता और लाभ को अधिकतम करने के लिए सही किस्म और तकनीकों का चयन करना आवश्यक है।

अमरूद के बागों के लिए नवीनतम तकनीक

उच्च घनत्व वाली पौध रोपण : मीडो या सघन प्रणालियों जिसमे कम अंतराल (2.5×2.5 मीटर, या बौने प्रकारों के लिए 2×1 मीटर) पर लगा सकते हैं। इससे प्रति एकड़ उपज बढ़ती है और बेहतर प्रबंधन संभव होता है।

ड्रिप सिंचाई और फर्टिगेशन : रोग को न्यूनतम करते हुए पानी और पोषक तत्वों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करें; स्वचालित फर्टिगेशन पौधे के जड़ क्षेत्र में सटीक पोषक तत्व पहुंचा सकता है।

एकीकृत रोग प्रबंधन : रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें और सुरक्षित कवकनाशी का समय पर छिड़काव करें, साथ ही वायु संचार के लिए नियमित छंटाई करें।

ग्राफ्टिंग और प्रवर्धन : समान वृद्धि और शीघ्र फलन के लिए प्रमाणित नर्सरियों/अनुसन्धान केन्द्रों से ग्राफ्टेड पौधे ही खरीदें।

मल्चिंग: नमी को संरक्षित करने, खरपतवारों को रोकने और मृदा

स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए जैविक या परा बैगनी अवरोधी प्लास्टिक मल्च का उपयोग करें।

अलग-अलग फलों की बेगिंग : प्रीमियम किस्मों के अमरूद के फलों की बेगिंग उन्हें फल मक्खी, धूप से झुलसने, कीटों, धूल और कुछ बीमारियों से बचाती है, साथ ही फलों के रंग, स्वच्छता और बाज़ार में उनकी बिक्री में भी सुधार करती है। आमतौर पर फलों के छोटे होने (मार्बल या अंडे जैसी अवस्था) पर ही बेगिंग की जाती है और तुड़ाई तक छोड़ दी जाती है, जिससे फलों की गुणवत्ता बेहतर होती है, दाग-धब्बे कम होते हैं और कीटनाशकों के अवशेष कम होते हैं।

तुड़ाई के बाद की देखभाल : फलों को छंटाई, श्रेणीकरण और पैकेजिंग के साथ सावधानी से तैयार करें ताकि उनकी शेल्फ लाइफ अधिकतम हो सके; बड़ी, निर्यात-गुणवत्ता वाली किस्मों के लिए कोल्ड चेन तक पहुंच महत्वपूर्ण है।

सफलता के लिए कुछ कदम

स्थान का चयन: अच्छी जल निकास वाली मिट्टी, तटस्थ पीएच, तथा जलभराव से सुरक्षित स्थान का चयन करें।

विविधता का चयन : समझें कि कौन सी किस्म आपके बाजार से मेल खाती है - लाल गूदा (प्रीमियम), बड़ा आकार (निर्यात), सफेद गूदा (टेबल/जूस) हेतु।

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री: केवल प्रतिष्ठित लाइसेंस प्राप्त नर्सरियों या अनुसंधान केन्द्रों से ही खरीदें, सुनिश्चित करें कि पौधे स्वस्थ, सही प्रकार के और ग्राफ्टेड हों।

स्मार्ट बाग़ लेआउट: नवीनतम रोपण प्रणालियों का उपयोग करें और ड्रिप, फर्टिगेशन और मल्चिंग में आवश्क रूप से निवेश करें।

रोग एवं कीट सतर्कता: स्वच्छ खेती पर ध्यान दें और कीटों एवं रोगों की नियमित निगरानी करें।

प्रीमियम किस्में क्यों मायने रखती हैं

आधुनिक अमरूद की किस्में जैसे ललित, वीएनआर बिही, थाई रेड, जरावी रेड, रेड डायमंड आदि जो की अपनी आकर्षक बनावट, मिठास, लंबी शेल्फ लाइफ और ताज़े फलों और प्रसंस्करण उद्योगों, दोनों के लिए उपयुक्तता के कारण बेहतर साबित हो सकती हैं। इन नयी किस्मों की उत्पत्ति भारतीय कृषि अनुसंधान और व्यावसायिक नर्सरी नवाचार का मिश्रण है, ताइवान पिंक और रेड डायमंड जैसी कुछ किस्मों की जड़ें विदेशों में हैं, लेकिन अब भारतीय प्रजनकों द्वारा इन्हें व्यापक रूप से अपनाया और बेहतर बनाया जा रहा है।

इन प्रीमियम किस्मों को स्मार्ट कृषि तकनीकों के साथ मिश्रित करके, उत्पादक खुद को आकर्षक बाजार क्षेत्रों में स्थापित कर सकते हैं और प्रतिस्पर्धा और बदलते उपभोक्ता रुझानों के खिलाफ अपने व्यवसाय को भविष्य के लिए सुरक्षित बना सकते हैं।

हालांकि, उत्पादकों को निजी क्षेत्र से ऐसी प्रीमियम किस्मों को अपनाते समय सावधानी बरतनी चाहिए। रोपण सामग्री की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता की पुष्टि करना, वास्तविक प्रदर्शन का आकलन करने के लिए मौजूदा बागों का व्यक्तिगत रूप से दौरा करना,और बड़े पैमाने पर रोपण से पहले कीटों, रोगों और स्थानीय अनुकूलनशीलता के प्रति संवेदनशीलता का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना आवश्यक है।

प्रीमियम अमरूद की खेती का अर्थशास्त्र

प्रीमियम अमरूद किस्मों की खेती उनके उच्च बाजार मूल्य, बेहतर उपभोक्ता स्वीकृति और लंबी शेल्फ लाइफ के कारण आकर्षक आर्थिक लाभ प्रदान करती है, जो फसल के बाद के नुकसान को कम करती है। प्रारंभिक निवेश में गुणवत्ता वाले ग्राफ्टेड रोपण सामग्री, उच्च घनत्व वाले रोपण, ड्रिप सिंचाई, फर्टिगेशन सिस्टम और कीट प्रबंधन सामग्रियां शामिल हैं। परिचालन लागत आमतौर पर अपनाई गई प्रौद्योगिकियों के आधार पर 2.0 से 2.5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर तक होती है। प्रीमियम किस्मों से परिपक्व बागों में प्रति हेक्टेयर 40-50 टन उपज हो सकती है, जिसमें सालाना 10-15 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर से अधिक की संभावित सकल आय संभावित है। निर्यात-गुणवत्ता वाले फलों पर मूल्यवर्धन और तुड़ाई के बाद की हैंडलिंग प्रथाओं जैसे छंटाई, ग्रेडिंग और कोल्ड स्टोरेज को एकीकृत करने के माध्यम से शुद्ध लाभ बढ़ जाता है।

भारत में प्रचलित प्रमुख किस्में

किस्म	फल का रंग/गूदा	फल का आकार	बीज	मुख्य विशेषताएं	रिमार्क
इलाहाबाद सफेदा	सफ़ेद	बड़ा मध्यम	कम	बहुत मीठा, मुलायम, उच्च विटामिन सी, अच्छी उपज एवं गुणवत्तापूर्ण फल	उत्तर भारत, उत्तरप्रदेश बिहार हेतु उपयुक्त निर्यात और जूस
लखनऊ 49 (सरदार)	सफ़ेद	बड़ा (200-300 ग्राम)	मध्यम	कुरकुरा, मीठा, उच्च उपज, सहनशील	सम्पूर्ण भारत
ललित	गुलाबी/लाल	मध्यम (185-250 ग्राम)	कम	गुलाबी-लाल गूदा, उच्च विटामिन सी, मीठा और सुगंधित, आकर्षक, उच्च उपज वाला, अर्ध-बौना वृक्ष फल ताजा उपभोग और प्रसंस्करण दोनों के लिए उपयुक्त है	आईसीएआर-सीआईएसएच, लखनऊ द्वारा विकसित
श्वेता	सफ़ेद	मध्यम (लगभग 130 ग्राम)	कुछ	मीठा, सुगंधित, उच्च उपज, दृढ़ मांस, उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु के अनुकूल	सीआईएसएच, लखनऊ द्वारा विकसित
धवल	सफ़ेद	मध्यम (300-400 ग्राम)	कम	रसदार, मीठा, मध्यम अम्लता, अच्छा शेल्फ जीवन (8-9 दिन)	सीआईएसएच, लखनऊ द्वारा विकसित
अर्का	सफ़ेद	मध्यम	कम	नरम, रसदार, मीठा,	IIHR बैंगलोर द्वारा
मृदुला				प्रसंस्करण के लिए अच्छा, उच्च उपज	विकसित
पूसा आरुषि	गुलाबी	मध्यम-बड़ा (190-240 ग्राम)	कम	संकर, बेहतर उपज, बेहतर गुणवत्ता, उत्तर, मध्य भारत और दक्षिण भारत के लिए उपयुक्त	आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली द्वारा विकसित
पूसा प्रतीक्षा	सफ़ेद	मध्यम-बड़ा (176-190 ग्राम)	कम	संकर, सहिष्णु, उच्च उपज, गुणवत्ता, उत्तर, मध्य भारत और दक्षिण भारत के लिए उपयुक्त	आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली द्वारा विकसित
निजी क्षेत्र की किस्में					
वीएनआर बिही	सफ़ेद	बहुत बड़ा (400-800 ग्राम)	कम	दृढ़, कुरकुरा, लंबी शैल्फ लाइफ, प्रीमियम, निर्यात हेतु पसंदीदा	छतीसगढ़, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश हेतु उपयुक्त
ताइवान पिंक	चटक गुलाबी	बड़ा मध्यम	कम	विदेशी, आकर्षक गूदा, सुगंधित, मीठा	व्यापक, प्रीमियम बाजार
जरावी रेड	गहरा लाल	बड़ा (400-1000 ग्राम)	बहुत कम	गहरा लाल गूदा, उच्च मिठास कम बीज, प्रीमियम लुक	निजी नर्सरी, उच्च-मूल्य वाला आला
रेड डायमंड	चटक लाल	बड़ा (400-1000 ग्राम)	बिना बीजों	बीजरहित, सुगंधित, शेल्फ-स्थिर, बौना स्वभाव	निजी नर्सरी, उच्च घनत्व वाले बाग

रेज्ड बेड पद्धति से चने की उत्पादन तकनीकी

- डॉ. एस.एस. धाकड़, वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी) कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर
- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, प्रमुख वैज्ञानिक (पौध संरक्षण) कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

उन्नत उत्पादन तकनीक

रेज्ड बेड पद्धति, उकठा निरोधी किस्में व एकीकृत कीट व रोग प्रबंधन तकनीक को अपनाकर चने का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। चना की बुआई के लिए रेज्ड बेड प्लान्टर का उपयोग किया जाता है। इसमें मेढ़ की ऊंचाई लगभग 15-20 से.मी. तथा मेढ़ से मेढ़ की दूरी 50-60 से.मी. रखी जाती है। एक मेढ़ के ऊपर फसल की दो कतारें 20-25 से.मी. की दूरी पर रखी जाती है। इस ऊची मेढ़ पर फसल की कतारें लगाने से पौधे की जड़ों में हवा का आवागमन अच्छी तरह से होता हैं जिसमें चना की जड़ों में बनने वाली गठानें अधिक से अधिक एवं बड़े आकार की बनती है। इस विधि में ऊँची मेढ़ के साथ-साथ एक गहरी नाली भी बनती है। वर्षा के दिनों में अधिक वर्षा की स्थिति में वर्षा का जल इन नालियों के माध्यम से खेत के बाहर चला जाता हैं जिसमें चना की फसल मेढ़ पर होने के कारण पानी के सम्पर्क में नहीं आती है फसल खराब होने से बच जाती है तथा कम वर्षा की स्थिति में दोनों तरफ से नालियों को बंद कर दिया जाता है।

उन्नत किस्में

जे.जी.-11, 16, 74, 130, 218, 412, 322, जाकी-9218, जवाहर चना काबुली-1, 3, काक-2, आई.सी.सी.व्ही.-2, विजय, विशाल, जे.जी.-63, 226, 6, 14, आर.व्ही.जी.-201, आर.व्ही.जी.-202, आर.व्ही.जी.-203, जे.जी.-12, जे.जी.-36

रेज्ड बेड पद्धति के लाभ

● सिंचाई के पानी का व्यवस्थापन अच्छी तरह से होता है। 30 प्रतिशत पानी की बचत होती है। ● समतल क्यारी विधि की अपेक्षा 20 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त होती है। ● वर्षा जल के अच्छे निकास के कारण नम भूमि में भी अच्छा उत्पादन। ● उर्वरक के सही व्यवस्थापन के कारण उर्वरक उपयोग क्षमता में बढ़ोतरी। ● बीज दर कम, जिसमें पौधों की संख्या नियंत्रित की जा सकती है। ● मेढ़ के बीच के खरपतवारों का यंत्रों के माध्यम से नियंत्रण। ● मेढ़ से मेढ़ की दूरी पर्याप्त होने से पौधों की कैनोपी को सूर्य की किरणें अधिक से अधिक मिलती हैं जिससे पौधें की शक्ति बढ़ती है तथा आस-पास की मिट्टी भी सूखी रहती है जिससे पौधों के झुकने की समस्या नहीं रहती है। ● समतल बुवाई विधि की अपेक्षा इसमें अंकुरण क्षमता अधिक होती है। क्योंकि समतल विधि में बीज को जमीन के अंदर डाला जाता है। जिससे पौधे को जमीन से बाहर निकलने में अधिक ऊर्जा की जरुरत होती है।

प्रमुख सावधानियां

● खेत की अच्छे से जुताई तथा समतलीकरण की आवश्यकता होती है। ● बुवाई के समय यह सुनिश्चित करें कि बीज नमी में ही डल रहा है तथा पर्याप्त गहराई पर डल रहा है। ● बीज को बोने से पहले अंकुरण क्षमता की जांच अवश्य करें तथा उपचार कर ही बीज बोयें।

भूमि की तैयारी

चने की खेती के लिये दोमट, मध्यम भारी भूमि जहाँ पानी का निकास अच्छा हो, उपयुक्त है। खेत की तैयारी के लिए पाटा लगाकर खेत को भुरभुरा एवं समतल बना लें। खेत में पूर्व फसल के अवशेष नहीं हों एवं अंतिम जुताई के समय दीमक से बचाव हेतु क्लोरोपाइरीफॉस चूर्ण 1.5 प्रतिशत 20-25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

बीज दर

80-100 किलो बीज प्रति हेक्टेयर। छोटे दाने वाली प्रजाति 75 से 80 कि.ग्रा./हेक्टेयर बीज एवं बड़े दाने वाली एवं काबुली प्रजातियों के लिए 100 कि.ग्रा./ हेक्टेयर।

बीजोपचार

विभिन्न प्रकार के फफूंद जनित रोगों से बचाव हेतु चने के बीज को बीजोपचार कर बुवाई करें। चने के बीज को थायरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज या ट्राइकोडर्मा विरिडि 5 ग्राम प्रति किलो बीज या थायरम 2 ग्राम, कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति किलो बीज या इनोसिगिनिया 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें तत्पश्चात राइजोबियम 5 ग्राम, पीएसबी 5 ग्राम प्रति किलो बीज दर के हिसाब कर बुवाई करें।

खाद व उर्वरक

सामान्यतः चने में 20 किग्रा नत्रजन, 60 किग्रा स्फुर व पोटाश की मात्रा 20 किग्रा प्रति हे. की दर से प्रयोग करें। चने की फसल में अनुशंसित मात्रा में खादों का प्रयोग करने हेतु इसकी पूर्ति सिंगल सुपर फॉस्फेट 3 क्विंटल, यूरिया 40 किग्रा या डी.ए.पी. 100 किग्रा+ जिप्सम (11 प्रतिशत) किग्रा प्रति हे. की दर से देकर की जा सकती है। गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद 5-8 टन प्रति हे. की दर से डालें।

बुवाई का समय व विधि

अधिक उत्पादन के लिए समय पर बुवाई आवश्यक है। 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक का समय सबसे उपयुक्त। परन्तु सिंचित अवस्था में नवम्बर तक बुवाई की जा सकती है।

दूरी

कतार से कतार 30 से.मी., पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. एवं गहराई 6-8 से.मी. पर करें।

सिंचाई

प्रथम सिंचाई फूल आने से पूर्व लगभग 40-45 दिन व दूसरी सिंचाई घेंटी में दाना भरते समय 75-80 दिन की फसल पर करें।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

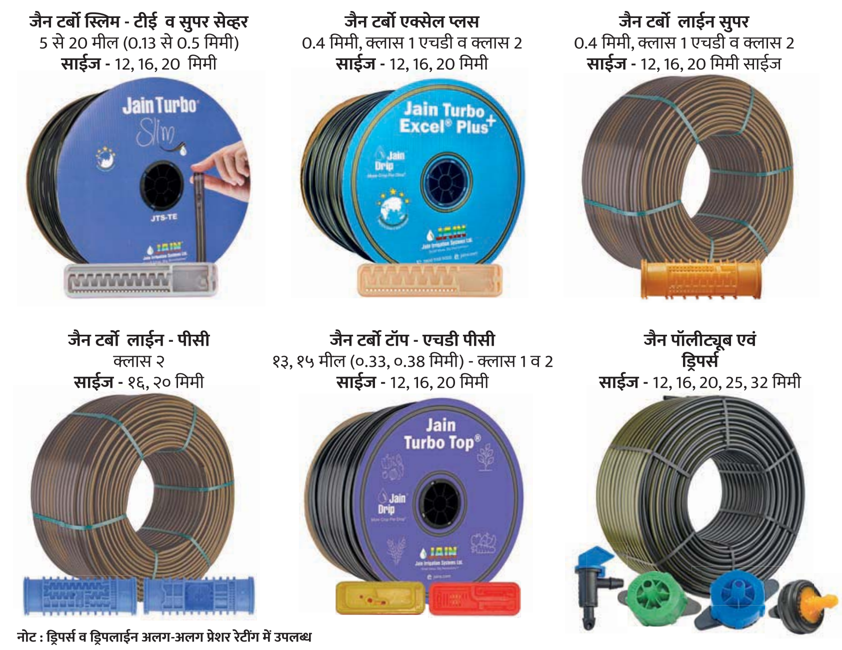

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूँद, फसल भरपूर!®
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

रबी फसलों में जल प्रबंधन

● दीपक चौहान (वैज्ञानिक–कृषि अभियांत्रिकी)
● डॉ. मृगेन्द्र सिंह (वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
● डॉ. अल्पना शर्मा (वैज्ञानिक)
● डॉ. बृजकिशोर प्रजापति (वैज्ञानिक)
● भागवत प्रसाद पंद्रे (कार्यक्रम सहायक)
कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर
deepakchouhan22@gmail.com

जल ही जीवन है, यह अटल सत्य है, क्योंकि जल मानव, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं के जीवन-यापन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग है। जल कृषि बागवानी के उत्पादन में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण आदान है, जन जीवों की कोशिकाओं में जल 70-90 प्रतिशत तक पाया जाता है। जल पादपों के अन्दर होने वाली समस्त चयापचय क्रियाओं के सुचारु रूप से संचालन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह प्रकाश-संश्लेषण प्रक्रिया, जोकि समस्त ब्रह्माण्ड की अकेली प्रतिक्रिया है, हेतु माध्यम का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त जल औद्योगिक उत्पादन, ऊर्जा स्रोत एवं यातायात में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सिंचाई का महत्व

● पौधों का 80-90 प्रतिशत भाग पानी का बना होता है और रसायनिक रूप में पानी, पौधों का एक अंग होता है।

● कोशिका द्रव का मुख्य भाग (80-90 प्रतिशत) पानी है। अतः कोशिका विभाजन बिना जल के सम्भव नहीं है। कहने का अभिप्राय यह है कि पौधों की पूर्ण वृद्धि जल पर ही निर्भर है।

● बीज के अन्दर भ्रूण का अंकुरण बिना जल के नहीं हो सकता है।

● पौधों में जल वाहक का कार्य भी करता है। जड़ें पोषक तत्वों को घोल के रूप में चूसती हैं व जल के माध्यम से चूसे गये पोषक तत्व ही पौधों के अन्य आवश्यक भागों में पहुँचते हैं।

● प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया में जल एवं कार्बन डाइऑक्साइड कच्चे पदार्थ के रूप में प्रयोग होते हैं, जो प्रकाश की उपस्थिति में पर्णहरित द्वारा कार्बोहाइड्रेट में परिवर्तित हो जाते हैं अर्थात् पौधों के लिये कार्बोहाइड्रेट आवश्यक पदार्थ भी जल की उपस्थिति में ही बनते हैं।

● पत्तियों में निर्मित होने वाले कार्बोहाइड्रेट का पत्तियों से दूसरे भागों में स्थानान्तरण भी जल द्वारा ही होता है।

● जल पौधों की कोशिकाओं को फुलाकर रखता है, जिसके फलस्वरूप कोशिकाएँ आकार में वृद्धि करके फसलों के पकने के समय में वृद्धि कर सकती हैं जिसके फलस्वरूप बाजार की मांग के अनुसार फसलें काटी जा सकती है।

● खेत में पानी लगाने से फसलों के हानिकारक कीट जैसे दीमक आदि को नष्ट किया जा सकता है।

● जल पौधों की जलोत्सर्जन क्रिया के लिये भी आवश्यक है। इस प्रक्रिया में पौधे अपने आप को वातावरण के अधिक तापमान (लू), कम तापमान (पाला) आदि से सुगमता से बचा सकते हैं।

● निरन्तर भूमि की सिंचाई करने से मृदा कणों के आकार में कमी होती है, जो फसलों की बढ़वार के लिये उपयुक्त है।

● भूमि में फसलों की वृद्धि हेतु अनेक लाभदायक सूक्ष्म जीवाणु जैसे राइजोबियम, जीवांश पदार्थ को सड़ाने वाले सूक्ष्म जीवाणु जैसे नाइट्रोसोमोनास, नाइट्रोसो को कम करके अनेक लाभदायक फफूंदियाँ, एलगी, एंजाइम भी मृदा नमी की उपयुक्त अवस्था पर ही पनपते हैं।

● लवणीय या ऊसर मृदा के सुधार के लिये विषैले प्रभाव के तत्वों का उदीलन सिंचाई द्वारा ही सम्भव है या सिंचाई जल में घोलकर इन विषैले लवणों को खेत से बाहर निकालते हैं।

सिंचाई कब करें ?

रबी फसलों में सिंचाई योजना बनाते समय मिट्टी का प्रकार, फसल, फसल की किस्म, वृद्धि काल, मिट्टी में जीवांश पदार्थ की मात्रा और खेत में विगत वर्ष बोई गयी फसल आदि का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। जब भूमि में जल की इतनी कमी हो जाए कि पौधों की वृद्धि एवं विकास दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, उस अवस्था में आवश्यकता अनुसार सिंचाई कर दें।

सिंचाई का समय

जब पौधों की वृद्धि एवं विकास में उपलब्ध नमी के कारण महत्वपूर्ण कमी आनी शुरू हो जाए, तब ही सिंचाई कर दें। खेत में सिंचाई करने का अनुमान निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर भी लगाया जा सकता है:-

पौधों की बाहरी दशा के आधार पर:- विभिन्न पौधों में सिंचाई की आवश्यकता विभिन्न लक्षणों जैसे पत्तियों का मुरझाना, पत्तियों का रंग बदलना अथवा कम या अधिक गहरा हरे रंग आदि को देखकर लगाया जा सकता है।

मिट्टी के गुण:- मिट्टी के भौतिक गुणों को देखकर सिंचाई के समय का पता लगाया जा सकता है। चिकनी मिट्टी में नमी की कमी के कारण दरारें पड़नी शुरू हो जाती हैं।

मृदा नमी माप कर:- फसल की सिंचाई का सही पता लगाने हेतु रेपिड मोयस्चर और टेनशियोमीटर का उपयोग किया जा सकता है।

पौधों के जीवन में क्रान्तिकारी अवस्थाओं के आधार पर:- समस्त फसलों के पौधों के जीवन काल में कुछ ऐसी क्रान्तिकारी अवस्थाएँ होती हैं जिनमें पौधे भूमि से पानी अधिक मात्रा में चूसते हैं। यदि इन अवस्थाओं में भूमि में पानी की कमी हो जाती है तो पौधों के विकास, बढ़वार एवं उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

विभिन्न फसलों की क्रान्तिक अवस्थाओं के आधार पर सिंचाई कब और कितनी करें -

गेहूं

सामान्यतः बौने गेहूं की अधिकतम उपज प्राप्त करने हेतु हल्की भूमि में जल की उपलब्धता के आधार पर सिंचाइयाँ निम्न अवस्थाओं में करें, अन्यथा इन अवस्थाओं में जल की कमी का उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ेगा। सिंचाई सदैव हल्की (6 सें.मी. गहरी) करें।

पहली सिंचाई - ताज मूल वृद्धि अवस्था में करें, यह अवस्था आमतौर पर बीज बोने के 20-25 दिन बाद आ जाती है। **दूसरी सिंचाई -** कल्ले फूटने की अवस्था में करें। यह अवस्था आमतौर पर बीज बोने के 40-50 दिन बाद आ जाती है। **तीसरी सिंचाई-** दीर्घ संधि अथवा गाँठ निर्माण की अवस्था में करें यह अवस्था बीज बोने के 60-65 दिन बाद आती है। **चौथी सिंचाई-** पुष्पावस्था में सिंचाई करें। यह अवस्था बीज बोने के 80-85 दिन बाद आती है। **पाँचवी सिंचाई-** दुग्धावस्था में सिंचाई करें। यह अवस्था बीज बोने के 100-105 दिन बाद आ जाती है। **छठी सिंचाई-** दाने भरने की अवस्था में सिंचाई करें।

जौ

पहली सिंचाई- कल्ले फूटने के समय अर्थात् बीज बोने के 30-35 दिन बाद। **दूसरी सिंचाई-** दुग्धावस्था में सिंचाई करें।

चना

पहली सिंचाई-बोने के 45-60 दिन बाद, फूल आने से पूर्व करें। **दूसरी सिंचाई-** फलियों में दाने बनने के समय करें। यदि जाड़ों में वर्षा हो जाए, तो दूसरी सिंचाई न करें।

मटर

पहली सिंचाई-फूल आने के समय पर सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-**दाने भरते समय एक सिंचाई करें। ऐसा करने से अधिक उपज मिलती है।

मसूर

पहली सिंचाई- फूल आने के समय सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-** फलियों के निर्माण के समय सिंचाई करें। शरद कालीन वर्षा हो तो सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं है।

राई/सरसों

पहली सिंचाई- फूल आने की अवस्था में बोने के 40-45 दिन बाद सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-** फली निर्माण की अवस्था में बोने के 80-85 दिन बाद सिंचाई करें। **तीसरी सिंचाई-** फलियों में दाने भरने की अवस्था में बोने के 105-110 दिन बाद सिंचाई करें।

मध्यभारत कि सबसे बडी कृषी प्रदर्शनी
ॲग्रो व्हिजन
कार्यशाला, राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शन व परिसंवाद
एक मंच
लाखों किसानों से भेट
अमर्याद अवसर
२१-२४ नवंबर २०२५ | रा.तु.म. नागपुर विश्वविद्यालय ग्राऊंड, अमरावती रोड, नागपुर
ॲग्रोव्हिजन २०२५ कि विशेषताएँ
▪ 2,00,000 + किसान
▪ 450+ संस्थाओंका सहभाग
एमएसएमई व अॅग्रीस्टार्टअपका विशेष दलान
▪ 30+ कार्यशाला
▪ 60+ कृषी तज्ञोंका मार्गदर्शन
संगोष्ठी : विदर्भ में अन्न प्रक्रिया उद्योग में अवसर
◆ उद्घाटक ◆
◆ कार्यक्रम के अध्यक्ष ◆

मा.ना.श्री. शिवराजसिंग चौहान
केन्द्रीय मंत्री, कृषी एवं किसान कल्याण, भारत सरकार
मा.ना.श्री. नितीन गडकरी
केन्द्रीय मंत्री, सडक परिवहन एवं यातायात, भारत सरकार

ॲग्रोव्हिजन सचिवालय
नागपुर : 97647 96709, 0712-2555 249 | मुंबई: 98187 08445 | दिल्ली : 9899208916, 011-4354 2737
नाशिक : 9958036410 | पुणे: 9923202884 : agrovision@agrovisionindia.in : www.agrovisionindia.in
#Agrovision2025 Follow / @agrovisionindia 8806070903
आयोजक
AGROVISION FOUNDATION
MM ACTIV Sci-Tech Communications
सहयोग
अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें

सीधे ग्राहकों तक पहुँचे. अपने उत्पादनों की पहचान बनाए

समस्या -समाधान

समस्या- सिंचित गेहूं में खरपतवार विशेष कर बथुआ का प्रकोप बहुत होता है, नियंत्रण के उपाय बतायें।

- शिवनारायण

समाधान- आपका क्षेत्र गेहूं धान वाला क्षेत्र है

जिसमें बथुआ की समस्या बहुत आती है। इसके नियंत्रण के लिये समय सीमा का बहुत महत्व है यदि समय से निंदाई और खरपतवारनाशी का उपयोग नहीं किया गया हो तो खर्च व्यर्थ सिद्ध होता है। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के समय से नियंत्रण किये जाने से फसल को पोषक तत्वों को होने वाले बंटवारे से निजात मिल जाती है। आप कृपया निम्न करें।

- बुआई के 30-35 दिनों के भीतर ही एक निंदाई हाथों से वो भी दो पौधों के बीच में छुपे खरपतवारों को निकालें।
- एक स्प्रे 2-4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 500-700 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।
- इसके अलावा पेन्डीमिथालिन का 1000 ग्राम/ हेक्टर की दर से छिड़काव किया जा सकता है।

समस्या- गेहूं में कंडुआ रोग के उपचार के उपाय बतायें।

- अमर सिंह तोमर

समाधान - आपका प्रश्न सामयिक है कंडुआ रोग एक ऐसा रोग है जिसका उपचार रोग आने के बाद संभव नहीं होता है। वास्तविकता यह है कि कंडुआ रोग की फफूंदी बीज के साथ भीतरी भाग में छुपी रहती है जो अंकुरण के साथ-साथ तने से होती हुई विकसित बालियों तक पहुंच जाती है। रोगग्रस्त पौधे एवं स्वस्थ पौधों में कोई फर्क नहीं दिखता और जब बाली झंडे में से फूटती है तब दानों की जगह काली फफूंदी दिखाई देती है जिस पर एक पतली झिल्ली भी रहती है रोग की फफूंदी हवा से उड़कर खेतों में फूलते गेहूं की बालियों में परागीकरण क्रिया के समय ही दानों में फिर से छुप कर बैठ जाती है रोगग्रस्त दाने भी सामान्य दानों के जैसे ही दिखते हैं जिनको बोने पर कई गुना बढ़कर कंडुआ आने वाले साल में दिखता है। आप निम्न उपाय करें।

- जिस खेत में गेहूं पर कंडुआ दिखा हो उस खेत का बीज आने वाले साल में कतई नहीं लगायें।
- यदि लगाना ही पड़े तो विटावैक्स नामक दवा की दो ग्राम मात्रा/किलो बीज के हिसाब से अनिवार्य रूप से उपचारित करके ही बोयें।
- रोगग्रस्त व बालियों को पॉलीथिन के बैग में इकट्ठा करके नष्ट करते रहें।

समस्या- चने की फसल में हर वर्ष उकटा रोग आता है। नियंत्रण या बचाव के उपाय बतायें।

- चैनलाल पाटीदार

समाधान- चने का उकटा रोग सामान्य रूप

से आता है। उकटा रोग की फफूंदी मिट्टी में रहती है। तथा साल दर साल पनपती रहती है। इस रोग के नियंत्रण के बजाय बचाव के उपाय अधिक कारगर हैं कृपया आप निम्न करें।

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करके मिट्टी में छुपी फफूंदी को नष्ट करें।
- बुआई पूर्व बीज का उपचार ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से अथवा 2 ग्राम थाईरम/किलो बीज का करें।
- हर वर्ष एक ही जमीन में चने की खेती नहीं करें।
- रोग रोधी जातियां जैसे जे.जी. 315, जे.जी. 74, जे.जी. 11, जे.जी.130, जे.जी.16 भारती, जे.जी.63, जे.जी.322, विजय श्वेता, काक 2, बी.जी. 1053 इत्यादि ही लगायें।
- चना के साथ अलसी की अंतरवर्तीय फसल लगायें दो कतार चने के साथ 1 कतार अलसी की लगायें।
- ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर सीमित क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में मिट्टी में डालें।

समस्या- चने की इल्ली के प्रभावी नियंत्रण के लिये कौन -कौन से कदम उठाना चाहिये ताकि हानि से बचा जा सके।

- मेहरबान सिंह

समाधान - चना आपके क्षेत्र की प्रमुख रबी फसल है और चने की इल्ली से पूर्व में हर वर्ष अच्छा खासा संघर्ष करना पड़ता था जब जाकर चना बच पाता है। वर्तमान में इल्ली के प्रभावी नियंत्रण के लिये एकीकृत कीट नियंत्रण के बिंदुओं की परख हो चुकी है। आप भी निम्न बिंदुओं को अपनाकर हानि से बच सकते हैं।

- खेत में सोयाबीन के पौधों को तुरन्त उखाड़ कर चारे जैसा उपयोग कर लें ऐसा करने से चने की मादा को अंडे देने से रोका जा सकता है।
- खेत में जगह-जगह टी आकार की खूटियां लगा दें ताकि चिड़िया/मिट्ठू उस पर बैठकर इल्लियों को खा सकें।
- इल्ली की प्रथम अवस्था पर पहले जैविक कीटनाशी का उपयोग करें।
- चने की पत्तियों की तुड़ाई करें।
- इल्ली दिखने पर यदि हानि के स्तर से ऊपर अर्थात् 3 इल्ली प्रति मीटर कतार में दिखे और चने की घेटियां बनना शुरू हो गई हो तो एक छिड़काव प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1.5 लीटर या क्विनालफॉस 25 ई.सी. 1 लीटर 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

समस्या- मसूर लगा रखी है इस फसल में कितनी सिंचाई कर सकते हैं ताकि अच्छा उत्पादन मिल सके।

- धर्मेन्द्र सिंह

समाधान- मसूर आमतौर पर वर्षा आधारित

स्थिति में लगाई जाती है। आपके क्षेत्र में कई जगह मसूर, धान काटने के बाद बिना खेत बनाये उतेरा फसल की तरह भी लगाते हैं। आपके पास यदि सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं अच्छा उत्पादन केवल सिंचाई करके नहीं लिया जा सकता है। आपने यदि फसल में उर्वरक का उपयोग किया है तो निश्चित ही सिंचाई से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। मसूर में पहली सिंचाई फसल बुआई के 30 से 40 दिनों बाद तथा दूसरी सिंचाई बुआई के 70 -80 दिनों बाद करनी चाहिये। इस बीच यदि शीतकालीन वर्षा हो गई हो तो सिंचाई कदापि नहीं करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 — कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 — कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 — कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 — कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 — कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 — कोड : 027

पपीता रु. 55 — कोड : 031
अदरक रु. 55 — कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 — कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 — कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 — कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें ☐
संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

सब्जियों में पोषक तत्वों का महत्व एवं कमी के लक्षण

• डॉ. रतनलाल सोलंकी (मृदा विशेषज्ञ), केवीके, चित्तौड़गढ़ (राज.)
solanki_rl@yahoo.com

सब्जियों में पोष्टिक गुणों के बढ़ाने एवं अधिक पैदावार प्राप्त करने हेतु कई पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इनमें से कुछ की अधिक तथा कुछ तत्वों की कम मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। जिन तत्वों की अधिक मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। उन्हे मुख्य पोषक तत्व कहते हैं। परन्तु सब्जी उत्पादन में इन दोनों प्रकार के तत्वों का समान महत्व है। बीज के अंकुरण से पहले फसल की कटाई तक हुई अवस्था में इन तत्वों की कमी से पौधों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। यदि कमी को उर्वरकों द्वारा पूरा न किया जाय तो पौधे अपने अंगों जैसे पत्ती, फूल, फलों द्वारा कमी के प्रत्यक्ष संकेत जाहिर करने लगते हैं। इन संकेतों तथा लक्षणों को सही ढंग से पहचानना तथा उनका विधिवत उपचार करना एक सफल सब्जी उत्पादक के लिए नितांत आवश्यक होता है। इसलिए सब्जी उत्पादन से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए पोषक तत्वों को आवश्यकतानुसार डालते रहें। इसकी जानकारी के लिए कुछ पोषक तत्वों का महत्व तथा उनकी कमी के मुख्य लक्षण दिए जा रहे हैं।

नत्रजन

जीवित पदार्थों का यह एक मुख्य भाग है। इससें पौधों में वृद्धि तथा जनन कार्यों हेतु प्रोटीन, विटामिन, एवं क्लोरोफिल का निर्माण होता है। क्लोरोफिल में नत्रजन होने के कारण पत्तियों वाली सब्जियों में नत्रजन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। नत्रजन की कमी से पत्तियां प्रारम्भ में पीली हरी तथा बाद में पीली पड़ जाती है पौधों की वृद्धि कम हो जाती है। फलों के आकार, तने और जड़ों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

टमाटर में नत्रजन की कमी से पौधों की वृद्धि रुक जाती है तथा उसका हरा रंग समाप्त हो जाता है। तने तथा पत्तियों की शिराओं का रंग हल्का बैंगनी हो जाता है। जड़ों की वृद्धि भी रुक जाती है। और बाद में भूरे रंग की होकर मर जाती है। पौधे के पीला हो जाने के कारण उनकी फूल वाली कलियां गिर जाती हैं। ऐसी हालत में पौधे पर बहुत कम फल लग पाते है। इसी प्रकार नत्रजन की कमी के लक्षण खीरा, कद्दू, मूली, प्याज तथा अन्य फसलों में भी प्रकट होते है। इस समस्या को दूर करने के लिए गोबर की खाद और नत्रजन धारी उर्वरकों का प्रयोग करें।

फास्फोरस

फास्फोरस पौधे की प्रारम्भिक अवस्था में जड़ों की अच्छी वृद्धि के लिए आवश्यक होता है। इससें पौधों कों मजबूती मिलती है तथा उसमें अधिक फूल आते हैं। जल्दी ही पकने की अवस्था आ जाती है। फास्फोरस से बीजों का गुण बढ़ जाता है। फली वाली सब्जियों में फास्फोरस जड़ ग्रंथियों के बैक्टिरिया को उत्तेजित कर नत्रजन स्थिरीकरण में सहायक होता फास्फोरस की कमी से पौधों की वृद्धि धीमी पड़ जाती है और तने पतले तथा रेशेदार हो जाते हैं। आलू में फास्फोरस की कमी से पौधों की पत्तियों एवं शिराओं तथा तनों विशेष रुप से नीचे की तरफ लाल बैंगनी रंग के धब्बे प्रकट हो जाते हैं। पौधों की वृद्धि धीमी पड़ जाती है और तने पतले तथा रेशेदार हो जाते हैं फलस्वरुप फसल देर से पकती है। आलू में फास्फोरस की कमी से पत्तियों के किनारे मुड़ जाते हैं। तथा बाद में कुछ झुलसे हुए दिखाई देने लगते हैं।

इसकी कमी से टमाटर की पत्तियों के निचले भाग पर लाल बैंगनी रंग के धब्बे दिखाई पड़ने लगते हैं, बाद में पूरा पौधा बैंगनी रंग का हो जाता है। मूली में भी उपरोक्त की भांति फास्फोरस की कमी से पत्तियों के नीचे का भाग लाल बैंगनी रंग का हो जाता है। प्याज में इसकी कमी के कारण पत्तियां छोटी रह जाती हैं।

पोटाश

पोटाश पौधों को बीमारी से बचाने की क्षमता प्रदान करता है। यह पौधों में स्टार्च तथा शर्करा बनाने तथा उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए सहायक होता है। यह बीज में गुदेदार भाग को बढ़ाता है आलू, शकरकन्द शलगम के उत्पादन में इसकी अत्याधिक आवश्यकता होती है। यह पौधों में पारी का संतुलन बनाये रखता है। भूमि में पोटाश की कमी होने पर पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे प्रकट होने लगते हैं। तथा पत्तियों के किनारे मुड़ने लगते हैं और पत्ती की सतह सूखी दिखाई देने लगती है। फल समान रुप से नहीं पकते हैं। टमाटर में पोटाश की कमी से फल नर्म हो जाते हैं। और पकाव समान रुप से नहीं होता है। पत्तागोभी में उसकी कमी से प्रारम्भ में पुरानी पत्तियों के किनारे सूखने लगते हैं। और बाद में ऊपर की ओर मुड़ने लगते हैं आलू में इसकी कमी से पत्तियों का रंग नीला हो जाता है। आलू बनाने वाला तना छोटा हो जाता है जिससे जड़ों की बढ़वार रुक जाती है। और अंत में आलू का आकार छोटा हो जाता है फलस्वरुप उपज घट जाती है।

कैल्शियम

कैल्शियम की कमी से पौधों का रंग हल्का हरा हो जाता है और पत्तियां पीछे की ओर मुड़ जाती है पौधा कमजोर हो जाता है। इसकी कमी से टमाटर के तने व पत्तियां ऊपर से नीचे की ओर सूखना प्रारम्भ कर देती हैं तथा फल के नीचे का भाग सूखकर सड़ने लगता है। मटर में प्रारम्भ में मध्य शिरा के पास लाल धब्बे बन जाते है। पौधे का रंग धीरे-धीरे सफेद होने लगता है और छोटा रह जाता है।

मैग्नीशियम

इसका मुख्य कार्य क्लोरोफिल का निर्माण करना होता है मैग्नीशियम साधारण भूमि में भी पाया जाता है। परन्तु अम्लीय तथा अधिक रेतीली जमीन में इसकी कमी हो सकती है इसकी कमी से पत्तियों में रंग बिरंगे धब्बे पड़ जाते हैं। पुरानी पत्तियां अधिक प्रभावित होती हैं पत्तियों के शिरों तथा किनारों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं पातगोभी व फूलगोभी में इसकी कमी से चमकीले धब्बे बन जाते हैं। पौधे छोटे रह जाते हैं पत्तियों पर धारियां बन जाती हैं, अधिक प्रभाव होने पर धब्बे वाला मर जाता है। फसल देर से तैयार होती है।

मैगनीज

यह भी आक्सीकरण तथा अवकरण क्रिया में सहायक होता है। मृदा में मैग्निशियम की कम मात्रा में मैगनीज की मात्रा होने पर पत्तियों का रंग पीला हो जाता है। टमाटर के पौधों में मैगनीज की कमी से पत्ती हल्की हरी होकर पीली पड़ जाती है। पौधों में फूल बहुत कम लगते हैं। यह सारे लक्षण क्लोरोफिल की उचित मात्रा में संश्लेषण न होने से उत्पन्न होते हैं। मैगनीज की कमी 10-15 किग्रा/हेक्टर मैगनीज सल्फेट का मिट्टी में डालकर पूरी की जाती है।

आयरन

कोशिकीय श्वशन में आक्सीकरण तथा अवकरण क्रियाओं में आयरन का महत्वपूर्ण योगदान है। आयरन की कमी से पत्तियों के मध्य एवं अन्य शिराओं को छोडकर शेष भाग पीला पड़ जाता है। इस स्थिति को ग्लोरोसिस कहते हैं। टमाटर पौधों में नई पत्तियों व क्लोरोसिस तथा ऊतकों का साथ हो जाता है। 8.0 से अधिक पी.एच. मान होने पर पौधे मृदा से आयरन नहीं ग्रहण कर पाते हैं। मृदा में आयरन की कमी की पूर्ति 10 किग्रा प्रति हेक्टेयर फेरस सल्फेट देकर के की जा सकती है।

बोरोन

बोरोन की कमी का प्रभाव पौधों की वृद्धि पर पड़ता है। पौधों की कलिका नष्ट हो जाती है। जिससे वौधे की वृद्धि रुक जाती है मृदा में बोरोन की कमी से पौधों की नई पत्तियां मुड़ जाती है। ब्राझन की बीमारी हो जाती है इसकी कमी से फूलगोभी के फूल तथा तने पर धब्बे पैदा हो जाते हैं। फूल भूरा छोटा व कड़वा हो जाता है इसके उपचार हेतु 5 किग्रा/ हेक्टर बोरेक्स डालना लाभदायक होता है।

जिंक

पौधों की समुचित वृद्धि के लिए जिंक भी महत्वपूर्ण है यह पौधे की वृद्धि तथा हारमोंस की क्रियाशीलता पर प्रभाव डालता है। इसकी कमी से बीज निर्माण रुक जाता है। टमाटर की पत्तियां पीली तथा छोटी हो जाती हैं। जिंक की कमी की पूर्ति 50 किग्रा/ हेक्टेयर जिंक सल्फेट मृदा में मिलाकर की जा सकती है। जिंक सल्फेट को फास्फोरस वाली खाद के साथ मिलाकर नही डालें क्योंकि यह फास्फोरस से क्रिया करके अघुलनशील जिंक सल्फेट बना देता है।

कॉपर

क्लोरोफिल निर्माण में कॉपर का महत्वपूर्ण योगदान है। कॉपर की कमी से पौधों की वृद्धि रुक जाती है। और पत्तियां पीली पड़ जाती है। इसकी कमी से प्याज के वल्व मुलायम हो जाते हैं तथा उसकी परतें पीली पड़ जाती है। कॉपर की कमी की मृदा में 25 किग्रा/हे. कॉपर सल्फेट डालकर पूरा करें।

मोलिब्डेनम

यह एंजाइम की क्रियाओं पर प्रभाव डालता है। नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए आवश्यक होता है। फलीदार फसलों में वायुमंडल से नाइट्रोजन स्थिर करने की क्षमता को बढ़ाता है। टमाटर के पौधों में मोलिब्डेनम की कमी से पुरानी पत्तियां मुड़ जाती हैं। और शिराएं फूल कर पीली पड़ जाती है। इसकी कमी से फूलगोभी की पत्तियां सिकुड़ कर फीते के आकार की हो जाती है इसके उपचार हेतु 3-4 किग्रा सोडियम मोलिब्डेड प्रति हेक्टर की दर से भूमि में दें।

रबी रागी की उन्नत कृषि तकनीक

● राजेन्द्र पटेल, सक्ती (छ.ग.)

रागी (माडिया या मंडुवा) भारत की प्राचीनतम व महत्वूर्ण अनाज फसल है और दक्षिण भारत में रागी को प्रमुख भोजन के रूप में महत्व दिया जाता है। उत्तर भारत में रागी को खरीफ में मुख्य फसल एवं दक्षिण भारत में रबी व ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में उगायी जाती है।

मिट्टी

रागी की खेती कई तरह की भूमि में की जाती है, ऊपरी और कम उपजाऊ भूमि में भी ये फसल अच्छी पैदावार देती है लेकिन अच्छी उर्वरता एवं उच्च कार्बनिक पदार्थ युक्त दोमट मृदा, जिसकी जलधारण क्षमता अच्छी हो उपयुक्त मानी जाती है। इसे बढ़िया जल निकास वाली काली मिट्टी में भी उगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी

खरीफ फसलों के कटाई पश्चात अवशेषों एवं खरपतवार के अवशेष एकत्रित करके नष्ट कर दें। भूमि की एक बार गहरी जुताई के बाद एक या दो हल्की जुताई करके पाटा लगाकर समतल कर लें। गोबर की सड़ी खाद 3 से 4 टन प्रति एकड़ खेत में अच्छी तरह मिला दे। खेत में बड़े-बड़े सूखे व सख्त ढेले होने पर रोटावेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बना लें। इस प्रकार तैयार भूमि में कतार से रागी फसल की बुआई करें।

उन्नत किस्म

इंदिरा रागी-1, छत्तीसगढ़ रागी-2, छत्तीसगढ़ रागी-3, व्ही.एल. मंडुवा-379, व्ही.एल. 352, भैरवी (बी.एम. 9-1), व्ही.एल.-149

बुआई

बीजोपचार- प्रमाणित बीज का प्रयोग सर्वोत्तम है। स्वयं के बीज को बुआई के पूर्व बीज साफकरके फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या थायरम या कैप्टान 4 ग्राम प्रति किलो रागी बीज की दर से उपचारित कर सुखा लें। उसके बाद कीटनाशक दवा या गौ मूत्र या ब्रम्हास्त्र या बीजामृत 6 मिली प्रति किलो रागी बीज की दर से उपचारित कर सुखा लें। तत्पश्चात उपचारित बीज को एजेटोबैक्टर या एजोस्पिरिलम (नत्रजन स्थिरीकरण बैक्टीरियम) व पी.एस.बी. कल्चर की 15-25 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। रोपा रागी हेतु नर्सरी पौध (थरहा) का जड़ उपचार किया जा सकता है।

बीज बोने का उचित समय- रबी रागी की बुआई के लिए अक्टूबर-नवम्बर एवं ग्रीष्मकालीन रागी के लिए दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से जनवरी मध्य तक का समय उत्तम है। ठंड के कारण रागी के बीज का अंकुरण हेतु 7 दिन तक लग सकते हैं, इसलिए धान की तरह अंकुरित बीज की बुआई उत्तम रहता है। बोआई के 20-25 दिन बाद खेत में अतिरिक्त पौधों को उखाड़कर खेत के रिक्त स्थानों में रोपे (गैप फिलिंग) और थिनिंग ऑपरेशन करके खेत में उचित पौधों की संख्या को बनाए रखें।

रागी की बुआई सूखा छिटकवां, लेही विधि या कतारों में की जाती है, साथ ही रोपा पद्धति से रोपाई भी की जाती है। रोपा पद्धति में नर्सरी पौध (थरहा) के जड़ को उपरोक्त दवाओं से उपचारित कर रोपाई करें।

बीज दर: आदर्श पौध संख्या (1.6 से 2 लाख प्रति एकड़) और अधिक उपज प्राप्त करने के लिए छिटकवां पद्धति के लिए 5 किलो, कतार बोनी हेतु 3-4 किलो तथा रोपा हेतु 1.5-2 किलो प्रति एकड़ बीज उपयुक्त है।

खाद एवं उर्वरक

जैविक खाद जैसे की अच्छी सड़ी गोबर की खाद 3 से 4 टन प्रति एकड़ खेत में अच्छी तरह मिला दे या वर्मी कम्पोस्ट 3-4 क्वि. प्रति एकड़ उपयोग करने से उत्पादन के साथ फसल गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। मृदा परीक्षण के आधार पर हीं उर्वरकों का प्रयोग करें। रागी फसल उर्वरक रिस्पोंसिव है, अधिक उत्पादकता हेतु संतुलित उर्वरक प्रबंधन करें। प्रायः यह देखा गया है कि उर्वरक या पोषक तत्व की कमी से फसल की बढवार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सामान्य परिस्थिति में 16-24 किलो नत्रजन, 8-12 किलो फास्फोरस व 6-8 किलो पोटाश प्रति एकड़ की दर से दी जा सकती है। फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बोआई से पूर्व खेत में समान रूप से अवश्य डाले अन्यथा पौधे की बढवार कम होती है तथा नत्रजन की शेष मात्रा को दो किस्तों में अंकुरण के 25-30 दिन और 40-45 दिन बाद निंदाई के पश्चात डालें।

सिंचाई

अच्छी उपज के साथ-साथ पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए सिंचाई आवश्यक है। रागी फसल की सिंचाई हेतु दो क्रांतिक अवस्था है, पहला कल्ले निकलने और दूसरा फूल आने की अवस्थायें इन दोनों अवस्थाओं में पानी की कमी होने से उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मिट्टी के प्रकार, मौसम की स्थिति व किस्म के अवधि के आधार पर 4 से 6 सिंचाई आवश्यक है। सामान्यतः सिंचाई बोआई के 20, 35, 48, 60 व 70 दिन बाद करें। शरद ऋतु में 18-22 दिन व गर्मी के मौसम में 9-11 दिन के अंतराल में सिंचाई गेहूँ या सरसों फसल की तरह स्प्रिंकलर से सिंचाई उत्तम रहती है, ग्रीष्मकालीन धान की तरह पानी भरकर ना रखें। रागी में पहली सिंचाई को बुआई के कम से कम 21 दिन बाद व दूसरी सिंचाई भी पहली सिंचाई के कम से कम 21 दिन बाद दें, जब जमीन में मध्यम दरारें दिखें ऐसा करने से प्रायः पौधे में कल्ले की संख्या ज्यादा देखी गयी है।

रागी जलभराव की स्थिति सहन नहीं कर सकती है, इसलिए सिंचाई के उद्देश्य से कुंडों और मेड़ों को तैयार किया जाना बेहतर रहता है, यह सिंचाई और अतिरिक्त पानी की निकासी के दोहरे उद्देश्य को पूरा करता है।

निंदाई-गुड़ाई

रागी की फसल को प्रथम 45 दिन तक खरपतवारों से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा उपज में भारी गिरावट आ जाती है। अतः रागी फसल में दो निंदाई-गुड़ाई आवश्यक है। पहली निंदाई बुआई या रोपाई के 15-20 दिन में तथा दूसरी 30-35 दिन में करें। कतार बोनी में सायकल व्हील हो से गुड़ाई करने में आसानी होती है।

खरपतवारनाशी

अंकुरण पूर्व- खरपतवार अंकुरण के पूर्व खेत में आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 300-400 ग्राम प्रति एकड़ या ऑक्सीफ्लोरफेन 23.5 प्रतिशत ई.सी. 100 मिली. प्रति एकड़ बालू में मिलाकर 3 दिन के अंदर उपयोग करने से कुछ घास व चौड़ी पत्ती के खरपतवार नहीं उगते। केवल रोपा पद्धति में रोपाई के 5-6 दिवस में बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल 0.6 प्रतिशत+ प्रेटीलाक्लोर 6 प्रतिशत जीआर. (लोन्डेक्स पॉवर या इरेज स्ट्राँग) 4 किग्रा. प्रति एकड़ उपयोग करने से चौड़ी पत्ती, मोथा व सांवा घास पर प्रभावी नियंत्रण होता है।

कृषक भारती को-ऑपरेटिव लि.
राज्य विपणन कार्यालय, भोपाल (म.प्र.)
ब्लॉक-2, भूतल पर्यावास भवन, अरेरा हिल्स, जेल रोड, भोपाल-462011
पीबीएक्स : 0755-2572164, ईमेल : smobhopal58@gmail.com

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-   ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

....

ग्राम ....पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/ मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक **कृषक जगत**

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

कण–कण में हैं भगवान

भगवान कण–कण में विराजमान हैं। यह बौद्धिकता है, किंतु परमात्मा को प्रकट करना हार्दिकता है। तन के लिए जीतना भोजन आवश्यक है, मन के लिए भजन उतना ही आवश्यक है, जैसे बिना भूख के समय होने पर भोजन कर लेते हैं, वैसे ही मन न लगने पर समय से भजन करें। परमात्मा का मिलन संत की कृपा से होता है। राम–सुग्रीव का मिलन भगवान हनुमान जी जैसे संत ही करा सकते हैं। जब कोई काल से डरता है तो संत भगवान की स्मृति दिलाकर उसे निर्भय करते हैं। जब कोई भगवान से न डरे तो संत काल का भय दिखाकर उसमें भय उत्पन्न कर भगवान से जोड़ देते हैं। विभीषण ने हनुमान जी में भगवान को देखा। भक्ति विज्ञान है, अंधविश्वास नहीं। जैसे पानी में बिजली है, इसको जानकार बिजली पैदा करते हैं, यह विज्ञान है। कण–कण में परमात्मा विराजमान हैं। यह भाव ही श्रेष्ठ है।

जिस प्रकार से सूर्योदय होने से घोर कोहरा छंट जाता है, उसी प्रकार भक्ति से पाप कर्म धुल जाता है। कितनी ही धर्मार्थ यात्रा, गंगा स्नान, यज्ञ, धर्म, पाठ कर लें, किंतु एक भक्ति ही उसे अपने अधीन बना लेती है। सच्चे भक्त को कर्म–धर्म करने की आवश्यकता नहीं होती। भगवान जिनके रोम–रोम में है, जिसके मुंह से सूर्य के समान ज्वालाएं निकल रही हैं, जिनमें अनंत मात्रा का ऐश्वर्य हो, ऐसे श्रीकृष्ण ही हैं। उनकी हमें पांच भावों – शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की उपासना करनी चाहिए। इन सबमें श्रेष्ठ माधुर्य भाव ही है।

माधुर्य भाव ही सर्वाधिक सामिप्य है। इस भाव में हम प्रेयसी हैं, वे हमारे प्रियतम हैं, ऐसी भावना निरंतर रहती है। अब लौकिक उदाहरण के अनुसार जैसे प्रेयसी का संबंध पति से अत्यंत निकट का होता है, पुत्र से उससे कम, सखा का उससे कम, दास का उससे भी कम तथा प्रजा का संबंध कम निकट का होता है। हमें भगवान श्रीकृष्ण की माधुर्य भाव से भक्ति करनी चाहिए।

साग–सब्जियों में छिपा अच्छी सेहत का राज

मामूली समझ दरकिनार कर दी जाने वाली साग–सब्जियों को वैज्ञानिकों ने ज्यादा सेहतमंद करार दिया है। ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पॉलीमाउथ और इंस्टीट्यूट ऑफ फूड, ब्रेन एंड बिहेवियर के वैज्ञानिकों के अनुसार, 19वीं सदी में लोग सामान्य साग–सब्जियों व फलों का ज्यादा इस्तेमाल करते थे। इससे वे सेहतमंद रहते थे क्योंकि इनमें शरीर के लिये सभी आवश्यक तत्व पाए जाते हैं।

19वीं सदी का आहार आज भी कारगर

- पांच हजार कैलोरी रोजाना ग्रहण करने के बावजूद लोगों की पाचनशक्ति रहती थी दुरूस्त
- साग, प्याज, गोभी, चुकंदर,

जलकुंभी जैसी सब्जियां व सेब, चेरी जैसे फल खाते थे लोग।

- मछली और मांस भी उल्लेखनीय मात्रा में भोजन में शामिल थे, जो बेहद पोषक होते हैं।

धूम्रपान से परहेज

- खेतों और कारखानों में कामगार लोग धूम्रपान और शराब से परहेज करते थे।
- शकरकंद जैसे कंदमूल का इस्तेमाल करने से प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक रहती थी।
- यीस्ट युक्त ब्रेड खाने से भी लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मिलती थी मजबूती।

इलाज की कम जरूरत

व्यक्ति अपने जीवन का करीब एक दशक इलाज के भरोसे गुजारता है। पुरूष में यह आंकड़ा 7.7 वर्ष व महिला के लिये 10 साल है। पर राबॉथम का मानना है कि 19 वीं सदी में लोग ज्यादा सेहतमंद होते थे। क्योंकि उनके खानपान में हरी सब्जियां, फल व मांस शामिल होता था।

नींबू: स्वाद में खट्टा, गुण में मीठा

❖ सुबह–शाम एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर पीने से मोटापा दूर होता है।

❖ बवासीर (पाइल्स) में रक्त आता हो तो नींबू की फांक में सेंधा नमक भरकर चूसने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।

❖ आधे नींबू का रस और दो चम्मच शहद मिलाकर चाटने से तेज खाँसी, श्वास व जुकाम में लाभ होता है।

❖ नींबू ज्ञान तंतुओं की उत्तेजना को शांत करता है। इससे हृदय की अधिक धड़कन सामान्य हो जाती है। उच्च रक्तचाप के रोगियों की रक्तवाहिनियों को यह शक्ति देता है।

❖ एक नींबू के रस में तीन चम्मच शकर, दो चम्मच पानी मिलाकर, घोलकर बालों की जड़ों में लगाकर एक घंटे बाद अच्छे से सिर धोने से रूसी दूर हो जाती है व बाल गिरना बंद हो जाते हैं।

❖ एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर सेंधा नमक मिलाकर सुबह–शाम दो बार नित्य एक महीना पीने से पथरी पिघलकर निकल जाती है।

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

पाक्षिक पंचांग

17 से 30 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
अगहन कृष्ण 13 से अगहन शुक्ल 10 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
17	नवम्बर	सोम	अगहन कृष्ण	13 प्रदोष व्रत
18	नवम्बर	मंगल	----------	13 शिव चतुर्दशी व्रत
19	नवम्बर	बुध	----------	14
20	नवम्बर	गुरु	----------	30 स्ना.दा. अमावस
21	नवम्बर	शुक्र	अगहन शुक्ल	1
22	नवम्बर	शनि	----------	2
23	नवम्बर	रवि	----------	3
24	नवम्बर	सोम	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
25	नवम्बर	मंगल	----------	5 विवाह पंचमी
26	नवम्बर	बुध	----------	6
27	नवम्बर	गुरु	----------	7 पंचक 10.2 दिन से
28	नवम्बर	शुक्र	----------	8 पंचक
29	नवम्बर	शनि	----------	9 पंचक
30	नवम्बर	रवि	----------	10 पंचक

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। सम्पर्क - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर ODOP – मिर्च–खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। संपर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119, नर्सरी स्थल : ग्राम–सिरलाय, तह.– बड़वाह 451115, जिला–खरगोन (म.प्र.)
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द

- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त

साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

जीरो टिल तकनीक से कृषि में आ रही क्रांति

मध्य प्रदेश के लिए मॉडल बन रहा छिंदवाड़ा जिला

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। छिंदवाड़ा जिला अब जलवायु-अनुकूल कृषि और नरवाई (पराली) प्रबंधन के क्षेत्र में पूरे मध्य प्रदेश के लिए एक मॉडल जिला बनकर उभरा है। लगभग डेढ़ साल पहले शुरू हुए इस कार्यक्रम के आशाजनक परिणाम अब जमीन पर दिखने लगे हैं, जहाँ किसान खुद से शून्य जुताई तकनीक अपना रहे हैं और नवाचार के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

BISA वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन और तकनीकी सफलता – इस सफलता के पीछे कृषि विभाग ओर अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (BISA) जबलपुर के वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों का विशेष मार्गदर्शन है। BISA के तकनीकी सहायक, श्री दीपेंद्र सिंह ने इस तकनीक को किसानों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने न केवल किसानों को मशीन चलाने का प्रशिक्षण दिया, बल्कि उन्हें सीधे बुवाई (Zero Tillage) के पर्यावरण और आर्थिक लाभों के बारे में भी जागरूक किया। श्री दीपेंद्र सिंह ने बताया कि बिना जुताई के बुवाई करने से मिट्टी की नमी बनी रहती है, शुरुआती खेत जुताई की लागत खत्म हो जाती हैं, डीजल की खपत कम होती है और पराली मिट्टी में मिलकर खाद बन जाती है, जिससे जमीन की उर्वरता बढ़ती है। इस पहल के तहत, ग्राम कामठी में किसान श्री किशोरी पवार के खेत पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया।

शून्य जुताई का मॉडल: हेमंत यादव की उद्यमिता– छिंदवाड़ा के परासिया विकासखंड के ग्राम जामनिया जेठू के किसान श्री हेमंत यादव ने इस कार्यक्रम से प्रेरित होकर जिले की पहली जीरो टिल मशीन खरीदी।

वरदान से कम नहीं यह मशीन – जामनिया जेठू की किसान श्रीमती राजकली ने बताया कि 'मेरे पति नहीं रहे और मेरे पास खेती का काम करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं। जीरो टिल मशीन मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

कृषि अभियांत्रिकी विभाग का सहयोग – कृषि अभियांत्रिकी के श्री समीर पटेल ने बताया कि किसान जीरो टिल मशीन पर सब्सिडी प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। किसान MP DAGE (ई-कृषि यंत्र अनुदान) पोर्टल पर जाकर बैंक से डिमांड ड्राफ्ट (DD) बनवाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

उपसंचालक कृषि श्री जितेंद्र कुमार सिंह ने किसानों से अपील की है कि वे इस मशीन का लाभ उठाएं। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि 35 से 40 एचपी तक के छोटे ट्रैक्टर वाले किसान भी इस मशीन को खरीदकर पराली प्रबंधन और समय से बुवाई कर सकते हैं, जिससे खेती की लागत घटेगी।

सुपर सीडर से कम हुई कृषि की लागत

कटनी (कृषक जगत)। कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अनुदान पर प्रदत्त 'सुपर सीडर' यंत्र का उपयोग करके कटनी जिले के विकासखंड ढीमरखेड़ा के ग्राम पान उमरिया के किसान श्री प्रेम कुमार मांझी ने आधुनिक तकनीक को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाते हुए न केवल अपनी खेती की लागत घटाई बल्कि अन्य किसानों को भी इस यंत्र के उपयोग के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

पिछले वर्ष तक किसान श्री मांझी भी अन्य किसानों की तरह धान या अन्य फसलों की कटाई के बाद खेत में बचे हुए अवशेष (नरवाई) को जलाते थे। जिससे प्रदूषण होता था और मिट्टी के

समय और श्रम भी बचा

महत्वपूर्ण पोषक तत्व नष्ट हो जाते थे, लेकिन कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा उन्हें अनुदान पर 'सुपर सीडर' यंत्र उपलब्ध हुआ, जिसने उनकी खेती का तरीका ही बदल दिया।

प्रेम कुमार मांझी बताते हैं कि सुपर सीडर मिलने से अब हमें नरवाई (पराली) जलाने की जरूरत नहीं पड़ती। यह यंत्र पिछली फसल के अवशेषों को बड़े आसानी से काटकर सीधे मिट्टी में मिला देता है, जिससे नरवाई का प्रबंधन खेत में ही हो जाता है। यह एक तरह से मिट्टी के लिए खाद का काम करता है। इस यंत्र का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बिना खेत की जुताई किए, नरवाई के बीच ही सीधे गेहूँ की बुवाई कर देता है। इससे समय की बचत होती है। सही गहराई और दूरी पर बुवाई से बीज की बर्बादी कम होती है और लागत घटती है और अंकुरण बेहतर होता है। साथ ही नरवाई के मिट्टी में मिलने से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है, जिससे अधिक पैदावार प्राप्त होती है। श्री मांझी ने कहा कि यह यंत्र छोटे और बड़े सभी किसानों के लिए वरदान साबित हो सकता है।

36 वर्षों से बीज व्यवसाय में अग्रणी

गुप्ता इंटरप्राइजेस अधिकृत डिस्ट्रीब्यूटर्स

1. MAHYCO PVT.LTD., JALNA	22. SHRIRAM FERTILISERS CHEMICALS, NEW DELHI (DCM GROUP)
2. J.K. AGRIGENETICS LTD., HYDERABAD	23. KAVERI SEEDS CO. LTD, HYDERABAD
3. ADVANTA ENTERPRISES LTD.	24. AJEET SEEDS PVT .LTD., AURANGABAD
4. NAMDHARI SEEDS PVT. LTD., BANGLORE	25. UPSURGE SEEDS OF AGRICULTURE LTD., RAJKOT
5. TOKITA SEED PVT. LTD.	26. CORTEVA AGRI SCIENCE SEEDS PVT. LTD, HYDERABAD
6. BOMBAY SUPER HYBRID SEEDS LTD., RAJKOT	27. NIRMAL SEEDS PVT. LTD., PACHORA
7. GREEN GOLD SEEDS PVT. LTD., AURANGABAD	28. RALLIS INDIA LTD. (DHANYA)
8. DAFTARI SEEDS PVT. LTD., SELOO	29. AMRIT GOLD AGRITECH (I), INDORE
9. MAHARASHTRA TRADERS, JALGAON (PRASHANT)	30. AG NUTRI LLP, AHMEDABAD
10. T. STANES & CO. LTD., COIMBATORE	31. SEE CIBA CROP SCIENCE, SECUNDERABAD (UP)
11. NUZIVEEDU SEEDS LTD., HYDERABAD	32. REMIK AGRI SEEDS PVT. LTD., AHMEDABAD
12. VNR SEEDS PVT. LTD., RAIPUR	33. GREEN GOLD AGRI & BIOTECH PVT. LTD. INDORE
13. PRABHAT AGRIBIOTECH LTD., HYDERABAD	34 MONSANTO HOLDING PVT. LTD. BANGALORE (SEMINIS)
14. VERDESIAN INDIA (CYTOZYME)	35. COROMANDEL INTERNATIONAL LTD., HYDERABAD
15. HALDIGHATI SEEDS CORPN., KANKROLI	36. BEST AGROLIFE LTD., DELHI
16. NUGENES PVT .LTD., HYDERABAD	37. ADAMA INDIA PVT. LTD., TELANGANA
17. EAST-WEST SEED INDIA PVT. LTD. AURANGABAD	38. UPL SAS LTD. INDORE,MUMBAI
18. INDO AMERICAN HYBRID SEEDS INDIA PVT. LTD., BANGLORE	39. BAYER CROP SCIENCES LTD., THANE
19. SURINDRA SEEDS FARM, PANIPAT	40. DHANUKA AGRITECH LTD. GURUGRAM
20. SEED WORKS INTERNATIONAL PVT. LTD., HYDERABAD	41. SIRA SEED (A BRAND OF RASI SEEDS), HYDERABAD
21. ECONS CROP PROTECTIONS PVT. LTD., AHMEDABAD	42. CHEMINOVA INDIA LTD., MUMBAI
	43 RUTU CROP CARE PVT. LTD, RAJKOT

सहयोगी संस्थान

बीज वितरक : पूजा इंटरप्राइजेस | सी एंड एफ एजेंट : गुप्ता सेल्स कार्पोरेशन/लक्ष्य मार्केटिंग

हेड ऑफिस : 233 व 315-320, प्रेम ट्रेड सेंटर, महारानी रोड, इंदौर (म.प्र.)

मो.: 9425063767 (आर.आर. गुप्ता), 9425316751 (अजय गुप्ता), 9425400984 (सूरज गुप्ता)

किसानों की उम्मीद पर खरा एसएमएल का टेक्नो ज़ेड

इंदौर (कृषक जगत)। किसानों द्वारा खेतों में खाद इसलिए डाला जाता है कि गुणवत्ता युक्त फसल के साथ ही खूब उत्पादन भी मिले। इस संदर्भ में देश की प्रतिष्ठित कम्पनी एसएमएल लि. का उत्पाद टेक्नो ज़ेड किसानों की इन दोनों उम्मीदों पर खरा उतरता है, क्योंकि इसके प्रयोग से फसल को पर्याप्त पोषण मिलता है, फलस्वरूप गुणवत्ता युक्त फसल के साथ ही उत्पादन भी बहुत बढ़िया मिलता है।

SML Transforming Agriculture

कम्पनी के हेड क्रॉप न्यूट्रीशन एंड बायोलॉजिकल श्री अंजनी मनबंश ने उत्पाद टेक्नो ज़ेड की विशेषताओं और इसके फायदों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि टेक्नो ज़ेड देश का पहला आधुनिक पेटेंट ORT तकनीक से बना सूक्ष्म कणों वाला जिंक खाद है। दरअसल यह जिंक सल्फेट नहीं, बल्कि जिंक ऑक्साइड है, जो फसलों को कई लाभ प्रदान करता है। इससे पौधों की जड़ों के अधिक विकास से जिंक और सल्फर की ग्रहण क्षमता तो बढ़ती ही है, साथ ही पौधों की कीटों और रोगों के प्रति, प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है। जिससे बेहतर उत्पादन मिलता है।

विशेषताएं - ORT तकनीक से निर्मित टेक्नो ज़ेड उत्पाद पारम्परिक जिंक सल्फेट की तुलना में कई गुना बेहतर है। यह आधुनिक सूक्ष्म पोषण उर्वरक है,जो जिंक ऑक्साइड और सल्फर जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध है। इसके विशेष सूक्ष्म कण पौधों की जड़ों तक आसानी से पहुंचते हैं, जिससे पौधों की पोषण ग्रहण क्षमता में वृद्धि होती है और पौधे स्वस्थ, सशक्त और रोग प्रतिरोधी बनते हैं। इससे मिट्टी के क्षरण में भी कमी आती है। इसकी एक खास विशेषता यह है कि यह फसल में जिंक और सल्फर की जब तक ज़रूरत हो, तभी तक पूर्ति करता है। टेक्नो ज़ेड का समान फैलाव होने से मात्रा भी कम लगती है। इसमें 67% सल्फर और 14% जिंक होता है, जो फसल को संतुलित पोषण प्रदान करता है। इसे अन्य खाद के साथ मिलाकर इस्तेमाल किया जा सकता है।

लाभ - टेक्नो ज़ेड में ज़िंक ग्रहण करने की क्षमता अधिक होने से पौधों की अच्छी वृद्धि होती है, जिससे उपज में भी लाभ मिलता है। खाद्यान्नों में ज़िंक की उचित मात्रा में उपलब्धता होने से यह मानव स्वास्थ्य में भी सहायक होता है। यह जड़ों से ज़िंक और मिट्टी के अन्य पोषक तत्वों के अवशोषण में भी मदद करता है। सल्फर, मिट्टी के पीएच को कम करने में सहयोग करता है। ज़िंक ऑक्साइड वाला टेक्नो ज़ेड फसलों को और भी कई लाभ प्रदान करता है।

रैलिस इंडिया ने न्यूकोड लांच किया

मुंबई (कृषक जगत)। टाटा समूह की कंपनी और कृषि-इनपुट क्षेत्र में अग्रणी, रैलिस इंडिया लि., द्वारा गत दिनों मिट्टी और पौधों के स्वास्थ्य के लिए उन्नत जैविक समाधानों के लिए समर्पित एक अग्रणी ब्रांड, न्यूकोड™ को लांच किया गया। यह भारत में टिकाऊ, विज्ञान-आधारित कृषि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

न्यूकोड™ का अर्थ है 'न्यूट्रिशन कोड', जो ब्रांड के फसल की उपज और स्वास्थ्य का अनुकूलन पौधों और मिट्टी में जैविक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक तरीके से दर्शाता है।

न्यूकोड™ के अंतर्गत, किसानों को वैज्ञानिक रूप से तैयार जैविक उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच प्राप्त होगी, जिनमें शामिल हैं: जैव-उर्वरक - मिट्टी को प्राकृतिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए, जैव-उत्तेजक - पौधों की वृद्धि और लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए और जैव-कीटनाशक - पर्यावरण-अनुकूल समाधानों के माध्यम से फसलों की सुरक्षा के लिए। इन उत्पादों को व्यवस्थित, आसानी से पहचाने जाने वाले समाधान सेटों में व्यवस्थित किया जाएगा, और पारंपरिक उत्पादों की जगह आज की कृषि के लिए डिज़ाइन की गई आधुनिक, रूपरेखा-आधारित प्रणाली को लाया जाएगा। न्यूकोड™ का शुभारंभ रैलिस इंडिया की टिकाऊ, विज्ञान-आधारित कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। किसानों को ज्ञान, उपकरणों और प्रशिक्षण से सशक्त बनाकर, हमारा लक्ष्य पूरे भारत में उच्च-प्रभावी जैविक आदानों को अपनाने को बढ़ावा देना और कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करना है।

RMPCL

आरएमपीसीएल ने रक्तदान अभियान का आयोजन किया

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कंपनी आर.एम. फॉस्फेट्स एंड केमिकल्स (आरएमपीसीएल) प्रा. लि. के संयोजन में गत दिनों इंदौर स्थित कम्पनी कार्यालय में एक दिवसीय रक्तदान अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें कम्पनी के एमडी श्री विनीत जैन, डिजिटल डाइरेक्टर साक्षी जैन, सीनियर जीएम (हेड एग्रोनॉमिस्ट) श्री प्रमोद कुमार पांडेय, बिजनेस हेड श्री एस. पी. चौहान,संस्था राउंड टेबल इंडिया और लेडिस सर्कल इंडिया के सदस्यों के अलावा आरएमपीसीएल की टीम भी मौजूद थी। इस अभियान में रक्तदाताओं द्वारा 110 यूनिट रक्त का दान किया गया। कम्पनी द्वारा रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र एवं उपहार वितरित किए गए।

उल्लेखनीय है कि आरएमपीसीएल द्वारा अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत समाज के लिए कई गतिविधियां संचालित की जाती हैं, इसी क्रम में यह एक दिवसीय रक्तदान अभियान का आयोजन किया गया। कम्पनी द्वारा 'रक्तदान करें, किसी को दूसरा जीवन दें' के साथ की गई अपील में कहा गया कि यह सिर्फ़ एक गतिविधि नहीं है। किसी की जीवन रेखा बनना, गर्व का क्षण है।

आपकी भागीदारी इस अभियान को सचमुच जीवन बदल देने वाला बना सकती है। आपके 10 मिनट एक जीवन बचा सकते हैं, क्योंकि हर सांस मायने रखती है। इस मार्मिक अपील का यह प्रभाव पड़ा कि रक्तदाताओं का आंकड़ा शतक पार कर गया। अंत में साक्षी जैन द्वारा सभी रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र एवं उपहार वितरित किए गए। इस रक्तदान अभियान को सफल बनाने में संस्था राउंड टेबल इंडिया और लेडीज सर्कल इंडिया के सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा।

डॉ. अवस्थी हुए सेवानिवृत्त

जबलपुर। जबलपुर कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार अवस्थी 41 वर्षों की सेवापूर्ण कर सेवानिवृत्त हुए। आपने अपनी विश्वविद्यालयीन सेवा का शुभारंभ सन् 1984 में पवारखेड़ा सेकिया। आपने 8 पीएचडी एवं 17 एम. टेक. शोध छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया है। आपने कई राष्ट्रीय स्तर की परियोजनाओं में कुशल अनुसंधानकर्ता के रूप में कार्य किया। आपके द्वारा 100 से अधिक शोध पत्र, 20 तकनीकी बुलेटिन, 10 पुस्तकें एवं 5 मोबाइल एप का कुशल सृजन किया गया।

ईगल बीज दमदार, दे भरपूर पैदावार...
42 साल से किसानों का अटूट विश्वास - ईगल के गुणवत्तापूर्ण बीज
ईगल गेहूँ बीज
ईगल-1201
EAGLE-1201
अक्टूबर से जनवरी तक बुवाई, मोटा चमकीला दाना, बम्पर कमाई
ईगल-1204
EAGLE-1204
समय पर बुवाई के लिए उपयुक्त
पैदावार में श्रेष्ठ, खाने में बेस्ट
सुशिका (ईगल-135)
Sushika
प्रचुर आयरन युक्त
ईगल-1213
EAGLE-1213
कम समय, अधिक कमाई
ईगल-1214
EAGLE-1214
समय पर बुवाई - ज़्यादा उपज- खाने में स्वादिष्ट
ड्यूरम गेहूँ (कठिया)
हर्षिका (ईगल-145)
Harshika
Eagle
Let's grow!
ईगल सीड्स एण्ड बायोटेक प्रा. लि.
अधिक जानकारी के लिए संपर्क : 70240 25555
www.eagleseeds.com

Coromandel
FUTURE POSITIVE
GROMOR SULPHA MAX
murugappa
"हर सल्फर SULPHA MAX नहीं होता"
• एफ एस आर टेक्नोलॉजी से युक्त 90% बेंटोनाइट सल्फर।
• ये लंबे समय तक फसल में सल्फर की जरूरत पूरी करता है।
• जमीन के पीएच मान को सुधार कर डाले गए सभी पोषक तत्वों के अवशोषण को सक्रिय रूप से बढ़ाता है।
• शुरुआत से अंत तक बीजों के अंकुरण, जड़ विकास, पत्तियों में हरापन एवं प्रकाश संश्लेषन को बढ़ाता है, फलस्वरूप उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में बढ़ोतरी होती है।
• फ़सलों को ठंड एवं पाले से बचाता है।
• पौधों में रोग और कीट प्रतिरोधी क्षमता तथा आलू और प्याज की भंडारण क्षमता को बढ़ाता है।
मात्रा – 10-15 किलो प्रति एकड़
समय – बुवाई के समय
GROMOR SULPHA MAX

कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर
द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला
60/- जैविक खेती समृद्ध कृषक
40/- भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके
60/- एकीकृत कीट प्रबंधन
60/- मधुमक्खी पालन
60/- जायद फसलें
50/- सरसों
70/- मसाला फसलें
90/- सदाबहार खेती
60 चना
60/- मृदा उर्वरता मैनुअल
60/- खेती के उन्नत तरीके (खरीफ फसल)
60/- खेती के उन्नत तरीके (रबी फसलें)
70/- सोयाबीन अनुसंधान तकनीक
50/- बाजरा की वैज्ञानित खेती
60/- रबी तिलहनी फसलें अलसी, कुसुम
60/- मसूर, मटर एवं मोठ की उत्पादन तकनीक
50/- लघु धान्य फसलों की उत्पादन तकनीक
60/- कौशल विकास दिग्दर्शिका
60/- गेहूं उत्पादन तकनीक
60/- एकीकृत पौध पोषक तत्व प्रबंधन
60/- पौध संरक्षण (खरीफ-रबी फसल सहित)
नाम .... ग्राम ....
पोस्ट .... तह. .... जिला........
फोन/मोबा. ....कुल राशि........
ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. ....
मनी ऑर्डर क्र. .... वी.पी. भेजें।
पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च अतिरिक्त
नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें
प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011, फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 09826021837

500 मिली बोतल मात्र रु 225/-में
इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा
IFFCO
फसलों की भरपूर पैदावार के लिए
इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला
आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि
500 मिली बोतल मात्र रु 600/-में
इफको नैनो उर्वरकों की प्रत्येक बोतल पर रू. 10000/- (अधिकतम 2 लाख) का आकस्मिक दुर्घटना बीमा मुफ्त*
NANO UREA
NANO ZINC
NANO COPPER
NANO DAP
इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय तल, पर्यावास भवन अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)
अधिक जानकारी हेतु : www.nanourea.in - www.nanodap.in ग्राहक सेवा हेल्पलाइन नंबर (टोल फ्री): 1800 103 1967 /iffco.coop /iffco_coop /iffco_PR /iffco

RMPCL
सुनहरे रबी की पहली किरण
Ziron Power+वाले खेतों के संग
इस रबी, अपने आलू, सरसों, गेहूं, प्याज, लहसुन और चने की फसलों को दें Ziron Power+ की शक्ति!
ZIRON POWER+
एक ही उर्वरक,
रबी के फसलों की करें पूरी हर ज़रूरत!
www.rmphosphates.com
Toll free: 8956926412

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम
50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित
नए आकार, नए कलेवर में
(एजीक्यूटिव डायरी)
कृषक जगत
डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
प्रमुख आकर्षण
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी।
• प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी।
• कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर ।
• कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी ।
• कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी ।
• बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी ।
• पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी ।
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
इंदौर : सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
इंदौर कार्या. : 9826024864
भोपाल : अजय बोन्द्रिया : 9826255861
नई दिल्ली : } निमिष गंगराड़े : 7387422952
जयपुर :
रायपुर : प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
ई-मेल : info@krishakjagat.org
हेल्पलाईन : 6262166222
कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद
कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए उपहार*
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
* नियम व शर्तें लागू
विशेष - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी